स्मारिका

82 वाँ स्थापना दिवस समारोह – 2025

गया कॉलेज, गया

(मगध विश्वविद्यालय, बोधगया की एक अंगीभूत इकाई)

Memorable Moments

Dr. A.P.J. Abdul Kalam Flanked by Dr. E. Hasnain and Sri Nitish Kumar, C.M. Bihar
3rd Bihar Science Conference (2010)

गया कॉलेज, गया

(मगध विश्वविद्यालय, बोधगया की अंगीभूत इकाई)

82 वाँ स्थापना दिवस समारोह - 2025

स्मारिका

नियामक मण्डल

प्रो० डॉ० सतीश सिंह चन्द्र	-	प्रधानाचार्य
डॉ० रामदेव प्रसाद	-	कुलानुशासक
डॉ० सुनील कुमार सिंह	-	परीक्षा नियंत्रक
श्री आदर्श कुमार गुप्ता	-	बर्सर
डॉ० धनन्जय धीरज	-	विभागाध्यक्ष, शिक्षा शास्त्र विभाग
श्री संतोष कुमार	-	प्रशाखा पदाधिकारी

मुख्य संपादक

डॉ० अनूप पति तिवारी

सम्पादन समिति

डॉ० रून्नू रवि
डॉ० रामउदय कुमार
डॉ० राजेश कुमार मिश्रा
डॉ० संगीता आर्या
डॉ० सोनू अन्नपूर्णा
डॉ० अरुण गर्ग
डॉ० प्रियंका कुमारी
डॉ० अब्दुल हई

डॉ० प्रेम कुमार

मंत्री

सहकारिता विभाग–सह–
पिछड़ा वर्ग एवं अति पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग–सह–
आपदा प्रबंधन विभाग–सह–
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग–सह–
पर्यटन विभाग,
बिहार सरकार

बिहार सरकार

कार्यालय :
कमरा नं,–257, द्वितीय तल,
विकास भवन, नया सचिवालय
पटना–800 015
दूरभाष : 0612–2235301
फैक्स : 0612–2235300
ई–मेल : min.coop-bih@nic.in
आवासीय कार्यालय : 3, सर्कुलर रोड, पटना
दूरभाष : 0631–2215894
मोबाईल : 9473400422
Email-drpremkrbjp1955@gmail.com

पत्रांक 69 / आा

दिनांक 06ध02ध2025

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि गया महाविद्यालय, गया अपना 82वाँ स्थापना दिवस मना रहा है। यह महाविद्यालय मगध क्षेत्र का गौरव है और मेरे लिए भी यह गौरव की बात है। मैं अपने आपको भाग्यशाली मानता हूँ कि मैं इस महाविद्यालय का छात्र रहा हूँ। मेरे व्यक्तित्व निर्माण में इस विद्यामंदिर का अतुलनीय योगदान है। इस महाविद्यालय से मेरे संबंध अत्यंत आत्मीय रहे है। इस महाविद्यालय ने कई पीढ़ियों को शिक्षित किया है। भविष्य में भी इस महाविद्यालय से गयावासियों को बहुत सी उम्मीदें है।

महाविद्यालय निरंतर नये–नये कृतिमान स्थापित करता रहे, अनमोल रत्न गढ़ता रहे। मैं इस महाविद्यालय के सर्वांगिण विकास हेतु सदैव तत्पर रहा हूँ और भविष्य में इस महाविद्यालय का विकास मेरी प्राथमिकता में रहेगा।

मैं इस अवसर पर सभी विद्यार्थियों, प्राचार्य, प्रोफसरों के साथ–साथ महाविद्यालय के शैक्षणिक तथा गैरशैक्षणिक कर्मचारियों की मंगलकामना करता हूँ।

प्रेम कुमार

(डॉ० प्रेम कुमार)

Prof. S. P. Shahi
Vice-Chancellor

MAGADH UNIVERSITY
NH 83, Bodhgaya - 824231 (Bihar) India
Tel + 91 0631 2222714 /2220387 (R)
Fax + 91 0631 222717(R) 2200572 (0)
Ph. + 91 0631 2200495 (0)
Website www.magadhuniversigy.ac.in

Ref.: .... Date : 05.02.2025

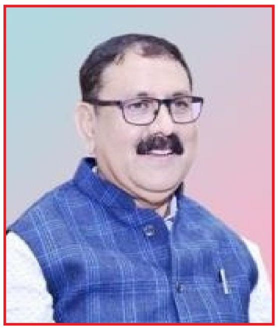

शुभकामना संदेश

यह अति प्रसन्नता का क्षण है की गया कॉलेज, गया अपना 82 वां स्थापना दिवस मना रहा है। मगध विश्वविद्यालय के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण महाविद्यालय के रूप में अपने गौरवशाली इतिहास को संजोए हुए यह महाविद्यालय नए–नए शैक्षणिक आयाम के तरफ अग्रसर है। इसी वर्ष स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम को प्रारंभ कर महाविद्यालय ने नई शिक्षा नीति के कार्यान्वयन के तरफ अपना कदम बढ़ाया है। मैं इस महाविद्यालय के शिक्षक, शिक्षकेत्तर कर्मियों एवं छात्रों को उनके लगन पूर्वक योगदान के लिए धन्यवाद देता हूँ और मंगल कामना करता हूँ कि यह महाविद्यालय सभी के सहयोग से निश्चित ही शिक्षा जगत में नए–नए कीर्तिमान स्थापित करेगा। साथ ही समाज व राष्ट्र निर्माण के प्रति अपने महत्वपूर्ण उत्तरदायित्वों को निभाने में सक्षम हो सकेगा। स्थापना दिवस के अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन स्वागत योग्य है।

सभी को स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

SPShahi.
कुलपति
मगध विश्वविद्यालय
बोधगया

Estd. 1944

Phone : 0631-2222442
E-mail : principal@gayacollege.ac.in
Website : www.gayacollege.ac.in

GAYA COLLEGE, GAYA

(A Constituent Unit of Magadh University, Bodhgaya, Bihar, India)

Ref. No. : ....

Date : 06. 02. 2025

शुभकामना संदेश

स्थापना दिवस हम सभी के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है, जो न केवल हमारे संस्थान की गौरवमयी परंपरा का प्रतीक है, बल्कि हमारे शैक्षणिक, सामाजिक दायित्वबोध का अवसर भी है।अपना यह महाविद्यालय स्थापना काल से लेकर आज तक ज्ञान, शोध एवं चरित्र निर्माण का एक प्रतिष्ठित केंद्र बना हुआ है। यह संस्थान अपने उत्कृष्ट शिक्षण, अनुशासन, एवं नैतिक मूल्यों के लिए जाना जाता है। हमारे शिक्षकों, प्रशासनिक अधिकारियों, छात्रों और समाज के सहयोग से यह संस्थान निरंतर प्रगति कर रहा है।आज जब हम इस गौरवशाली अवसर पर स्मारिका का विमोचन कर रहे हैं,यह स्मारिका उन सभी व्यक्तित्वों के प्रति सम्मान है जिन्होंने इस संस्थान के उत्थान में अपना योगदान दिया है।

इस अवसर पर मै आप सभी से आह्वान करता हूँ कि हम सब मिलकर इस महाविद्यालय की गरिमा को बनाए रखें और इसे नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने का संकल्प लें तथा शिक्षा के साथ—साथ नैतिकता, अनुशासन, एवं समाज सेवा को अपनाते हुए हम इस संस्थान की समृद्ध परंपरा को और भी सशक्त बनाये। इस अवसर पर महाविद्यालय के सम्मानित शिक्षक, शिक्षकेत्तर कर्मी तथा मेरे प्यारे विद्यार्थी को हार्दिक शुभकामनाऐं।

प्रो. (डॉ०) सतीश सिंह चन्द्र
प्रधानाचार्य

गया महाविद्यालय के प्रधानाचार्य

(स्थापना काल : 1944 से वर्ष 2024 ई0 तक)

नाम		
1.	**श्री जर्नादन मिश्र,** एम.ए.. डी.फिल.	अगस्त 1944 से जुलाई 1945
2.	**श्री अमरेन्द्र नारायण,** एम.एस-सी	जुलाई 1945 से 21.09.1952
3.	**श्री (डॉ०) किशोरी शरण वर्मा,** एम.ए., पीएच.डी.	22.09.1952 से 12.03.1953
4.	**श्री सच्चिदानन्द सिन्हा,** एम.ए., बी.एल. (कार्यकारी)	13.03.1953 से 13.09.1961
5.	**श्री रामेश्वर प्रसाद,** एम.ए., एल.एल.बी.	14.09.1961 से 25.03.1962
6.	**श्री (डॉ०) राजीव नयन प्रसाद,** एम.ए., पीएच.डी.	26.03.1962 से 04.04.1965
7.	**श्री (डॉ०) कामेश्वर प्रसाद अम्बष्ठ,** एम.ए., पीएच.डी.	05.04.1965 से 03.05.1968
8.	**श्री भागवत प्रसाद,** एम.कॉम (कार्यकारी)	04.05.1968 से 06.10.1969
9.	**श्री (डॉ०) भुवनेश्वर नाथ मिश्र 'माधव',** एम.ए., पीएच.डी.	07.10.1969 से 11.01.1972
10.	**श्री परमानन्द,** एम. कॉम (कार्यकारी)	12.01.1972 से 11.01.1973
11.	**श्री (डॉ०) नरेश चन्द्र अग्रवाल,** एम. कॉम., पीएच.डी. (कार्यकारी)	12.01.1973 से 12.04.1973
12.	**श्री (डॉ०) हरगोविन्द सिंह,** एमए, एम.एस-सी. पीएच्. डी. (कार्यकारी)	13.04.1973 से 03.12.1973 (पूर्वाहन)
13.	**श्री (डॉ०) विश्वनाथ प्रसाद,** एम.ए., एम.डी.पी.ए., एम.पी.ए.बी.एल. पीएच.डी.	03.12.1973 (अपराहन) 14.02.1984
14.	**श्री (डॉ०) शिवनाथ सिंह,** एम.ए., पीएच.डी.	15.02.1984 से 31.03.1995
15.	**डॉ० कमलदेव नारायण सिंह,** एम.ए., पीएच.डी.	01.04.1995 से 21.02.1999
16.	**डॉ० मदन मुरारी,** एम.एस-सी., पीएच.डी.	22.02.1999 से 19.11.2008
17.	**डॉ० श्रीकान्त शर्मा,** एम.एस-सी., पीएच.डी.	22.11.2008 से 14.07.2014
18.	**डॉ० एम. शमसुल इसलाम,** एम.एस-सी., पीएच.डी.	15.07.2014 से 24.12.2017
19.	**डॉ० अशोक कुमार, एम.एस.,** पीएच्.डी. (कार्यकारी)	25.12.2017 से 31.12.2017
20.	**डॉ० देवेन्द्र कुमार सिन्हा,** एम.एस-सी.. पीएच.डी. (कार्यकारी)	01.01.2018 से 07.06.2018
21.	**डॉ० दिनेश प्रसाद सिन्हा,** एम.ए., पीएच.डी.	08.06.2018 से 29.07.2021
22.	**डॉ० दीपक कुमार,** एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी.	29.07.2021 से 24.10.2021
23.	**डॉ० दिनेश प्रसाद सिन्हा,** एम.ए., पीएच. डी.	25.10.2021 से 09.06.2022
24.	**डॉ० दीपक कुमार,** एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी.	16.06.2022 से 18.07.2022
25.	**डॉ० दिनेश प्रसाद सिन्हा,** एम.ए., पीएच.डी.	19.07.2022 से 30.08.2022
26.	**डॉ० दीपक कुमार,** एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी.	31.08.2022 से 07.12.2023
27.	**डॉ० सतीश सिंह चन्द्र,** एम.एससी., पीएच.डी., एलएल.बी	08.12.2023 से कार्यरत

सरस्वती–वन्दना

आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री

निनादय नवीनामये वाणि! वीणाम् ।

मृदु गाय गीतिं ललित–नीति–लीनाम ।।

मधुर मञ्जरी पिञ्जरीभूतमालाः, वसन्ते लसन्तीह सरसा रसाला,

कलापाः ललित कोकिलाकाकलीनाम्।

निनादय नवीनामये वाणि! वीणाम् ।।

वहति मन्दमन्दं सनीरे समीरे, कलिन्दात्मजायास्सवानीरतीरे,

नतां पङ्क्तिमालोक्य मधुमाधवीनाम्। निनादय नवीनामये वाणि! वीणाम् ।।

ललितपल्लवे पादपे पुष्पपुञ्जे, मलयमारुतोच्चुम्बिते मञ्जुकुञ्ज,

स्वनन्तीन्ततिम्प्रेक्ष्य मलिनामलीनाम्।

निनादय नवीनामये वाणि! वीणाम् ।।

लतानां नितान्तं सुमं शान्तिशीलम् चलेदुच्छनेत्कान्तसलिलं सलीलम्,

तवाकर्ण्य वाणीमदीनां नदीनाम्।

निनादय नवीनामये वाणि! वीणाम्।।

विनातां वृथा श्रीनिधिं श्रीर्निधीनां वसन्तो हसन्मोहिनी मोहिनीनाम्।

कथय को विलम्बोऽम्ब! वरवादिनीनाम्।

निनादय नवीनामये वाणिवीणाम् ।।

ॐ शम्

गया महाविद्यालय की स्थापना से जुड़े महानुभावगण

धनेश प्रसाद
संस्थापक सचिव
16.11.1916—04.12.1990

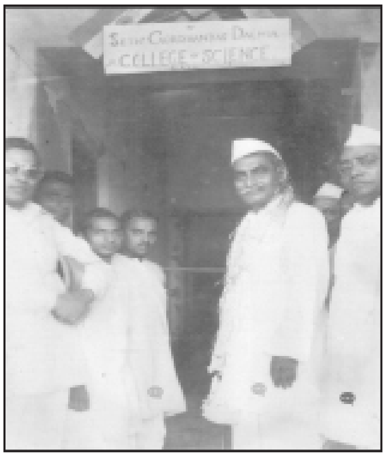

देशरत्न डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद
के द्वारा गया कॉलेज, गया के
विज्ञान संकाय का उद्‌घाटन 2 जून 1960

गुरूशरण लाल भदानी
संस्थापक अध्यक्ष
01.01.1900—31.12.1955

अध्यक्ष (सर्व श्री) :—
लाला गुरुशरण लाल — संस्थापक अध्यक्ष
डॉ० अनुग्रह नारायण सिंह — उपमुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री, बिहार सरकार ।
तत्कालीन जिलाधिकारी, गया—पदेन अध्यक्ष

सचिव (सर्व श्री) :—
धनेश प्रसाद, अधिवक्ता—संस्थापक एवं अन्तिम सचिव
हरिहर प्रसाद, अधिवक्ता
राय बलवीर प्रसाद, अधिवक्ता

सहयोगी स्थानीय शिक्षाप्रेमी (सर्व श्री) :—

हरिहर गिरि—महन्त, बोधगया	शतानन्द गिरि—महन्त, बोधगया,
जयराम गिरि—महन्त, बोधगया	डॉ० गोपी राम डालमिया,
लक्ष्मी नारायण भदानी,	कैलाशपति भदानी,
डॉ० केदारनाथ पालित,	उमाचरण लाल
ब्रजकिशोर नारायण लाल, अधिवक्ता	राय बागेश्वरी प्रसाद,
श्री नारायण मिश्र, अधिवक्ता	ख्वाजा मिद्दत नूर, अधिवक्ता,
सरदार लतीफुर रहमान, विधायक	वामेश्वर प्रसाद नारायण सिंह, P.P.,
श्यामनन्दन प्रसाद सिंह, न्यायाधीश एवं लोकायुक्त	रामनन्दन प्रसाद सिंह, अधिवक्ता P.P.,
शान्ति देवी, विधायक	रामराज सिंह, अधिवक्ता,
अभिमन्यु कुमार मित्तल,	मथुरा प्रसाद

सम्पादकीय

सम्मानित पाठकगण! गया कॉलेज गया के स्थापना समारोह मे महाविद्यालय की स्मारिका आपके हाथ में है ।आज महाविद्यालय में महाविद्यालय के शिक्षक विद्यार्थी और नगर के गणमान्य व्यक्ति स्थापना दिवस के रूप में इस महत्वपूर्ण संस्था के द्वारा सामाजिक रचना में किए गए योगदानों को स्मरण कर उत्साहपूर्वक सथापना दिवस मना रहे हैं। उत्सव के साथ–साथ समभवतःआज यह चिंतन का भी दिवस है, कि हम कहां से चले थे? और कहां तक पहुंचे हैं?

एक शिक्षण संस्था के रूप में इस महाविद्यालय के इतिहास बोध में बहुत सी ऐसी बातें हैं जो सभी को गौरवान्वित करती है और बहुत सी ऐसी बातें भी उपस्थित हो गई है जिनका विश्लेषण करना आवश्यक है ।उनमे पहला प्रश्न तो यही है कि हम अपने इस स्वर्णिम इतिहास बोध को आगे कैसे ले जाएं ? आज संपूर्ण विश्व एक प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति में है ।हमें हर क्षेत्र से प्राप्त हो रही स्पर्धा में बने रहने के लिए सैद्धांतिक ज्ञान के साथ साथ उसके अनुप्रयोगात्मक कौशल की भी आवश्यकता है। सम्भवतः इसीलिए सभी क्षेत्र में कौशल विकास की आवश्यकता सबसे प्राथमिक माने जाने लगा है। उच्च शिक्षा में इस कौशल विकास को हम कई चरण में विकसित कर सकते हैं और इसी संभावना को दृष्टिगत करते हुए नए–नए उपागमो से परिचित होते जा रहे हैं। आज किसी भी संस्था के शैक्षणिक उपलब्धियों में कौशल विकास कार्य–क्रम एक आवश्यक कदम हो गया है क्योंकि कोई भी संस्था अपनी सांस्कृतिक विरासत एवं बौद्धिकता के आधारभूत समृद्धि के होते हुए भविष्य को अपने हाथों से यूं ही नहीं चले जाने देगा कि अभीतक उसने नई प्रौद्योगिकी को आत्मसात नहीं किया है। इन्हीं सब बातों को दृष्टिगत करते हुए गया कॉलेज परिसर में स्किल डेवलपमेंट सेंटर माननीय सूक्ष्म एवं लघु उद्योग मंत्री भारत सरकार श्री जीतम राम मांझी एवं कुलपति मगध विश्वविद्यालय प्रो० शशि प्रताप शाही के कर कमलों से उदघाटित हुआ।

अवधेय है कि यदि भाषा , दर्शन, साहित्य ,संगीत एवं सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम विद्यार्थियो के व्यक्तित्व और उनके बौद्धिक क्षमता को समृद्ध करते हैं तो कौशल ज्ञान उहें व्यवहारिक जीवन जीने के ढंग को सुगम बनाते हैं। शिक्षा एक सामाजिक धरोहर है और सामाजिक कार्य क्षेत्र में नेतृत्त्व की भूमिका महत्वपूर्ण है जिन्हें अच्छी शिक्षा का लाभ मिला है। उन्हें इस बात को देखना होगा कि बदलते हुए स्थिति में वे शिक्षा के स्वरूप को कैसे जनमानस के साथ अधिक से अधिक जोड़ सकते हैं ? समकालीन परिवेश हमें यह सिखाता है कि यह बिल्कुल बुरा नहीं होगा कि इस दिशा में दृढ प्रतिज्ञ होकर यदि हम आगे बढें। मगध का अतीत हमें यह बताता है की हमारे ऊपर इन बातों की न केवल ऐतिहासिक जिम्मेदारी है बल्कि हम इसे पूर्ण करने में सक्षम भी है। स्मारिका में प्राचार्य द्वारा सुभाष चंद्र बोस के व्यक्तित्व निर्माण में उनके दर्शन और अध्यात्म की प्रति अभिरुचि ने महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रेरणास्पद आलेख प्रस्तुत है। यह लेखन सुभाष चंद्र बोस के व्यक्तित्व निर्माण के आंतरिक पहलुओं का विश्लेषण करता है ।महाविद्यालय के यशस्वी प्राचार्य के सद्प्रेरणा से इसवर्ष परिसर मे स्वामी विवेकानंद की आदमकद मूर्ति की स्थापना की योजना है। इस प्रसंग को दृष्टिगत करते हुए स्वामी विवेकानंद की जीवन–रेखा को भी एक संक्षिप्त आलेख के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है । महाविद्यालय की स्थापना जिन सत्पुरुषों के संकल्प से पूर्ण हुआ उनमें धनेश प्रसाद तथा गुरुशरण लाल भदानी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। इन महानुभावों के जीवन से संबंधित संक्षिप्त आलेख प्रकाशित है। ।स्मारिका के लिए सामग्री चयन और लेखन में संपादन समिति के सदस्यों द्वारा उत्साहपूर्वक सहयोग के लिए मैं सभी सदस्यों के प्रति ह्रदय से आभारी हूँ। स्मारिका में विद्वानों के संक्षिप्त आलेख के अतिरिक्त कुछ विभागों तथा महाविद्यालय में संचालित केंद्रो की संक्षिप्त जानकारी इस प्रयास मे प्रदान की गई है कि विद्यार्थियो को ज्यादे से ज्यादे सूचनात्मक सामग्री प्राप्त हो सके। एक तय सीमा के अंतर्गत इतनी सूचनाएं मुझे संतोषप्रद लगता है क्योंकि परिसर की व्याप्ति वृहद् है स्वभावतः एकही जगह हम सभी बातें नहीं लासकते संभव है। इस स्मरिका में कुछ अवश्य कमियां होंगी, किंतु आप सह्रदय सुधीजन इन्हें नजरअंदाज कर देंगे, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

अंत में आप सभी को यथोचित अभिवादन!

डॉ० अनूप पति तिवारी

सुभाषचंद्र बोस जयंती समारोह पर विशेष

प्रो० सतीश सिंह चन्द्र
प्राचार्य, गया कॉलेज, गया

बीसवी शताब्दी के भारतीय प्रज्ञावन व्यक्तित्वों में सुभाषचंद्र बोस युवाओं के आदर्श व प्रेरक पुरुष के रूप में सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। इनका जन्म जन्म 23 जनवरी 1897 ई में कटक में हुआ था । पिता जानकी बोस पेशे से सरकारी वकील थे, तथा माता का नाम प्रभावती देवी कुशल गृहिणी थीं। ये अपने माता–पिता के छठे संतान थे। इनका परिवार काफी बड़ा था फलतः परिवार में रिश्तेदारों का खूब आना–जाना भी था इसी पारिवारिक वातावरण में इनके व्यक्तित्व में सहनशीलता धैर्य विनम्रता स्वाभाविक रूप से विकसित हुआ।

जहां तक स्कूली शिक्षा की बात है 5 वर्ष की आयु में इनका 'प्रोटेस्टेंट यूरोपीयन स्कूल' में इन्हें भेजा गया। स्कूल में पढ़ाई के साथ–साथ व्यक्तित्व विकास के और भी कई प्रकल्प चलते थे। सुभाष बाबू का मानना था कि उस स्कूल में भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल पढ़ाई नहीं होती थी। मुख्य रूप से बाईबल यूरोप का भूगोल तथा यूरोप का इतिहास, तथा लैटिन की ही पढ़ाई होती थी। स्कूली पढ़ाई के बाद सुभाष बाबू कॉलेज जीवन में अपने गुरु 'बेनी माधव दास' के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुए। वहीं उन्होंने स्वामी विवेकानंद की रचनाओं का अध्ययन किया, श्रीअरविंद के साहित्य को भी पढ़े इन ग्रंथों के पढ़ने से उन्होंने अपने जीवन के लक्ष्य निर्धारित करने में सहायता मिली। रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, श्रीअरविंद सरीखे महापुरुषों की इन शिक्षाओं का सुभाष पर गहरा प्रभाव पड़ा। फलतः वे योगमार्ग पर बढ़ाने की भी कोशिश किये किंतु इस क्षेत्र में उन्हें विशेष सफलता नहीं मिली, तो वे गुरु की खोज में निकल पड़े। इस खोज में उनहोंने ऋषिकेश, मथुरा, वृंदावन, अयोध्या, काशी तथा गया में अनेक साधु संतों से भेंट किया किंतु किसी साधु संत में उनकी आस्था नहीं हो पाई।

इसके अनंतर आगे की पढ़ाई के लिए उनका दाखिला प्रेसीडेंसी कॉलेज में हुआ। कॉलेज जीवन तक आते–आते उन्होंने निश्चय यह कर लिया था, कि उन्हें इस जीवन में आध्यात्मिक उन्नति के साथ–साथ मानवता की सेवा भी करती है। उनका यह मानना था कि जीवन का एक अर्थ है, और उसे अर्थ को समझने के लिए संयम तथा अनुशासन अति आवश्यक है। कॉलेज के जीवन में अपने सहपाठियों के साथ उन्होंने अनेक सामाजिक कार्य किया तथा उस समय के विशिष्ट लोगों से भेंट किया। अपने अध्ययन के दौरान ही वे टैगोर से मिले और उसे ग्राम सुधार के बारे में विस्तृत चर्चा किया। कॉलेज जीवन के बाद एक वर्ष के लिए सैनिक जीवन का भी अनुभव प्राप्त किया। मां–बाप के कहने पर वह कैंब्रिज में सिविल सर्विस की परीक्षा हेतु कैम्ब्रिज चले गए। वहां पर उन्होंने आईसीएस की परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया। यह उनके तीक्ष्ण बौद्धिकता का प्रेरणास्पद प्रमाण है।

इस शानदार शैक्षणिक सफलता के बावजूद देश सेवा की उत्कृष्ट इच्छा में उन्होंने फरवरी 1921 में अपने पद से त्यागपत्र दे दिया और स्वदेश लौट आए। वे लंदन से लौटते ही मुंबई में गांधी जी से मिले। गांधी के साथ हुई भेंट वार्ता में सुभाष बाबू गाँधी के विचारों से पूरी तरह सहमत नहीं हुए। उसी समय बंगाल में देशबंधु चितरंजन दास प्रमुख बुद्धिजीवी के रूप में प्रसिद्ध हो चुके थे। सुभाष बाबू ने उन्हें पत्र लिखा तथा देश के लिए अध्यापन, पत्रकारिता और समाज सेवा संकल्प रखा। देशबंधु चितरंजन दास ने उन्हें यह भरोसा दिलाया कि यदि आप देश में अगर देश सेवा करना चाहते हैं तो आपको किसी प्रकार के कार्य की कमी नहीं होगी। प्रभावित होकर देशबंधु चितरंजन दास को ही सुभाष बाबू ने अपना ही राजनीतिक गुरु माना था।

चितरंजन दास के कहने पर नेशनल कॉलेज की प्रिंसिपल के रूप में कार्य करते हुए बांग्ला कथा नामक बांग्ला साप्ताहिक का संपादन तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक दल के कप्तान बनकर इन्होंने देश की सेवा की। 1922 में बंगाल राहत समिति का निर्माण कर लगभग 1000 लोगों के साथ ढाई महीने तक इन्होंने राहत कार्य किया।

सुभाष बाबू को राष्ट्रवादी कहा जाता है किंतु इनकी राष्ट्रवाद ठीक वैसे ही नहीं थी जैसे कि जर्मनी का राष्ट्रवाद था 1933 के पत्र में उन्होंने इस बात का जिक्र किया है कि जर्मनी के नए राष्ट्रवाद में संकीर्णता स्वार्थ तथा घमंड के सिवाय और कुछ नहीं है। वे निष्कर्ष पर पहुंचने से पहीले एक संतुलित अवधारना विकसित कर लेते थे। एक बार उन्होंने कहा कि दर्शन में मेरी रुचि अभी भी है किंतु आजकल अधिक समय नहीं निकल पाता मनोविज्ञान से अभी संपर्क बनाए हुए हूँ आजकल राजनीति पढ़ रहा हूं यानी की राजनीति दर्शन और अंतरराष्ट्रीय राजनीति सब जनता पढ़ने की कोशिश भी करता हूँ। क्योंकि

लोक सेवा करने वाले व्यक्ति को सभी समस्याओं का ज्ञान होना चाहिए यह कमी खलती है और विशेषज्ञ के रास्ते में बाधक है इसमें कोई कुछ नहीं कर सकता क्योंकि जीवन बहुत छोटा है, और व्यक्ति की क्षमता संकुचित है मैंने अनुभव किया है कि अनिश्चय और खतरे से भरी जिंदगी जीने का अपना सुख है यदि यह जीवन किसी कारण राष्ट्र के प्रति समर्पित किया गया है तो वह आपके सभी दुखों वह प्रतिपूर्ति कर देता है। जीवन को रोमांटिक बना देता है।

हम सभी जानते हैं सुभाष बाबू ने स्वप्रेरणा से अपना जीवन संघर्षमय कर लिए थे उनका यह जीवन अनुभवों, राजनीतिक सक्रियता तथा देश–विदेश के व्यापक भ्रमण से निर्मित हुआ। उन्होंने अपने जीवन में जिन ग्रंथों का अध्ययन किया है। उनका विवरण अनेक पत्रों से प्राप्त होता है। उनके व्यक्तित्व को समझने के लिए उनसभी की चर्चा करना आवश्यक है, क्योंकि इन्हीं पुस्तकों के आधार पर अपना जीवन दर्शन विकसित किया, राष्ट्र की मुक्ति के लिए योजनाएं बनाई। शिमला में जब वे नजर बंद थे तो उन्होंने जवाहरलाल नेहरू से इन पुस्तकों को मांगा था। गोल्डन ईस्ट की हिस्टोरिकल ज्योग्राफी आफ यूरोप पीटर रिवर्स की क्लैश ऑफ़ कल्चर , शार्ट हिस्ट्री ऑफ़ अफ्रीका आरपी दत्त की वर्ल्ड पॉलिटिक्स जेवीएस हाल्दाने की राइस एंड फ्यूचर प्रमुख है।

सुभाष बाबू मन के नियंत्रण के द्वारा शक्ति अर्जन में विश्वास करते थे। इन्होंने मानव मन को समझने के लिए फ्राइड की पुस्तक इंटरप्रिटेशन आफ ड्रीम पढ़ीं किंतु सुभाष बाबू फायड से सहमत नहीं हुए, और उन्होंने फायड के ही पुस्तक 'शोल प्रॉब्लम्स ऑफ द प्रेजेंट टाइम' तथा 'रियलिटी ऑफ़ द सोल' का भी अध्ययन किया और अपने जीवन में उतारा मैं चुपचाप बैठ कर सोचता हूं। उस दिव्य शक्ति के विषय में जो कुछ बर्गसा की अलान विटल जैसी है और अपने अस्तित्व को उसमें मिला देने का प्रयास करता हूं। आत्मसमर्पण के पश्चात मुझे आभास होता है कि वह दिव्य शक्ति मुझ में भी है और मैं उसे दिव्य शक्ति का एक उपकरण मात्रा हूं। भौतिक वस्तु की कभी मैंने कोई चाह नहीं कि वे तो शुद्ध और व्यर्थ की चीज हैं, इसके विपरीत में अपने मन को समझाता रहता हूं कि आत्मसमर्पण द्वारा तुम भी शक्तिशाली बनोगे। वे आगे लिखते हैं ''जब तक आप मनोविकारों पर विजय नहीं प्राप्त कर लेते तब तक शांति नहीं मिल सकती धीरे–धीरे संघर्ष में आनंद आने लगता है और जब किसी विचार पर विजय मिल जाती है तो बहुत संतोष और आत्मविश्वास पैदा हो जाता है। मानसिक व्यायाम से बहुत बल प्राप्त होता है जब भी मुझे समय मिलता है। मैं अपने मन में झांक कर देखने का प्रयास करता हूं और तलाश करने का प्रयास करता हूं कि क्या मुझ में कोई कमजोरी है। इस प्रकार मुझे बहुत सी व्यर्थ की चीज मिली जिन्हें मैं जड़ से उखाड़ने का प्रयत्न किया। कमी को ढूंढ लेने का अभिप्राय है आपने आदि विजय पा ली। गलत और अनुपयोगी बातों का पता लगा लेने पर आत्मनिरीक्षण सरल हो जाता है और आप मानवीय कमजोरी को आसानी से दबा सकते हैं''।

अनिल चंद्र गांगुली को लिखे पत्र में सुभाष बाबू ने लिखा है। ''मानसिक परेशानियों का मुख्य कारण यही है कि हम लोग यही नहीं जान पाए की मन मे क्या है ? मन एक ऐसी अजीब चीज है की वह स्वयं को ही धोखा देता है ।अतः लगातार आत्मविश्लेषण आवश्यक है मानसिक व्यायाम की दृष्टि से यह बहुत महत्वपूर्ण है और असामान्य मनोविज्ञान और साइक्लोपैथी की विश्लेषण ने मेरी बहुत सहायता की है।'' वह आगे कहते हैं कि ईश्वर में मुझे बहुत विश्वास है मैं प्रार्थना में भी विश्वास करता हूं यद्यपि स्वयं प्रार्थना नहीं करता मानसिक श्रम जो मैं कर रहा हूं ।वह दो प्रकार का है जो मेरे मूड पर निर्भर करता है। इनमें से एक है आत्मनिरीक्षण में शांतिपूर्वक बैठकर सोचता रहता हूं की मैंने मानवीय दुर्बलता को अर्थात् लोग लालच भय गुस्से पर नियंत्रण किया है कि नहीं इस क्रिया से मुझे बहुत शांति मिलती है तथा दूसरी क्रिया है–आत्मसमर्पण।

मैंने अनेक बार भूख हड़ताल की है, आदमी केवल भोजन के सहारे जीवित नहीं रह सकता, उसे नैतिक तथा आध्यात्मिक संपोषण की आवश्यकता होती है जिससे वंचित किए जाने पर आप उसे जीवित रहने की अपेक्षा नहीं कर सकते। मात्र अपनी योजना पर अमल के लिए या उसे अपनी चाल के अनुकूल बनाने के लिए आप भूख हड़ताल का प्रयोग नहीं कर सकते सुभाष बाबू अहिंसा पर विश्वास नहीं रखते थे यह कहते हैं अहिंसा तात्विक या अलौकिक शक्ति नहीं है इसलिए हमारे लिए उपवास किया भूख हड़ताल वर्जित नहीं है। 1934 के लिखे एक पत्र में रहते हैं की फिलहाल अभी तक मैंने कोई पार्टी नहीं बनाई है नई नई पर नई पार्टी बनाने की आवश्यकता है मैं डरपोक लोगों के साथ कार्य नहीं कर सकता इस संगठन से दो किस्म के लोगों को अलग रखने की आवश्यकता है डरपोक और स्वार्थी ᑊ सुभाष बाबू उसे समय राजनीति में नरम नीति अपनाने वालों के विरुद्ध थे ।वह कहते हैं कि भारत की युवा पीढ़ी में धैर्य नहीं है मेरी बात उनका भी विचार है कि गांधी अपने विचारों में वह कार्यों में आवश्यकता से अधिक भले और मध्यम मार्गी हैं ।हम अधिक परिवर्तनकारी आक्रामक नीति में विश्वास

करते हैं। निर्भीक और निस्वार्थ राजनीति में विश्वास करने वाले सुभाष बाबू ने आगे चलकर फॉरवर्ड ब्लॉक नामक एक राजनीतिक संस्था भी बनाइ।

1935 में उनकी पुस्तक 'द इंडियन स्ट्रगल' प्रकाशित हुई थी जिसे लंदन की बिसात एंड कंपनी से प्रकाशित किया लंदन प्रेस द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक की पर्याप्त प्रशंसा हुई उसे समय यह माना जाता था कि किसी भारतीय राजनीति के द्वारा भारत पर लिखी गई यह सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है। इस पुस्तक की लोकप्रियता को देखते हुए प्रसिद्ध ब्रिटिश लेखक रोमियो रोंला ने उसे पुस्तक की भूरी–भूरी प्रशंसा किया था।

सुभाष बाबू किसी भी प्रकार का मदभेद होने पर संवाद में विश्वास करते थे। मतभेद या विवाद की स्थिति में उन्होंने अपने जीवन में संवादहीनता कभी नहीं लाई। 1939 के आसपास महात्मा गांधी और सुभाष जी लगभग 40 पत्र व्यवहार हुए जिसमें असहमति और सहमति की मुद्दे पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया ।

गाँधी और जवाहरलाल नेहरू को भी सुभाष चंद्र बोस ने लंबे–लंबे पत्र लिखे हैं। कांग्रेस के त्रिपुरी अधिवेशन के बाद जवाहरलाल नेहरू को सुभाष चंद्र बोस ने अपने पक्ष को रखते हुए निःसंकोच लगभग 20 पृष्ठ का पत्र लिखा। महात्मा गांधी के लिखित पत्र में उन्होंने अपने पक्ष रखते हुए एक बार लिखा था कि स्वभावतः ''मैं प्रतिरोधी व्यक्ति नहीं हूं और मैं शिकायतें भी नहीं करता एक तरह से मेरी मानसिकता एक मुक्केबाज की है यानी मुक्केबाजी का दौर खत्म होने के बाद हाथ मिलाना और परिणाम को खेल भावना से स्वीकार करने में विश्वास रखता हूँ''।

देशभक्ति सुभाष बाबू ने 6 जुलाई 1944 को सिंगापुर से रेडियो के प्रसारण में इन्होंने महात्मा गांधी को संबोधित करते हुए कहा कि ''महात्मा भारत की स्वतंत्रता की अंतिम युद्ध प्रारंभ हो चुकी है। इस पवित्र युद्ध में हमें आपकी सद्भावना तथा आशीर्वाद की आवश्यकता है'' । सुभाष बाबू ही वो पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने गांधी को 'महात्मा' शब्द से संबोधित किया था। ऐसा कहा जाता है कि भारत का यह सपूत 19 अगस्त 1945 को ताइपे हवाई अड्डे पर हवाई दुर्घटना मे हम लोगो से दूर हो गया। अब तक इस दुर्घटना की सत्यता की जांच के लिए तीन आयोग गठित किया जा चुके हैं जिनमें से दो आयोग ने तो इस घटना को सच मान किंतु तिसरे आयोग का निर्णय अभी आना शेष है।

इस प्रकार सुभाष चंद्र बोस को संसार क्रांतिकारी और राजनेता के रूप में जानता है लेकिन दर्शन और धर्म के क्षेत्र में उन्हें खोजने की अपेक्षा की गई है। वास्तव में की सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों का स्रोत उनकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति थी। सुभाष चंद्र बोस के धार्मिक और धार्मिक विचारों में निरंतर विकास हुआ। उन्होंने अनगिनत साधू–सन्यासियों से भेंट की गुरु की खोज का भरसक प्रयास किया। विभिन्न साधना पद्धतियों को आजमाया और फिर जीवन की कुछ सिद्धांत निर्धारित किए। सुभाष का मत था कि संसार भाव की अभिव्यक्ति है। सुभाष ने आत्म विश्लेषण की पद्धति को मन पर नियंत्रित रखने का उपयोगी साधन माना। वे जीवन के आधारभूत सिद्धांत हिंसा नहीं, प्रेम को मानते हैं। उनकी दृष्टि में प्रेम तथा परम सत्ता एक ही है सुभाष बाबू के व्यक्तित्व के निर्माण के इस महत्वपूर्ण पक्ष की अनदेखा करके हम उनके न तो व्यक्तित्व का निर्धारण कर सकते हैं और नहीं उनके द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण कर सकते हैं। अंत में आजाद हिंद फौज के गीत का अंश प्रस्तुत है।

''आजाद हिंद फौज का गीत
कदम कदम बढ़ाए जा
खुद ही के गीत गाए जा
यह जिंदगी है कौम की
तू कौम पर लुटाए जा
तू शेर हिंद आगे बढ़
मरने से तू कभी न डर उड़ा दी दुश्मनों का सर
जोशे वतन बढ़ाए जा
कदम कदम बढ़ाए जा।''

लाला गुरूशरण लाल भदानी : एक श्रद्धांजलि

कुँवर प्रसाद सिन्हा, अधिवक्ता
गया बार कौंसिल

समाज के नायकों की चर्चा अक्सर होती है, क्योंकि वे आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा के प्रतीक होते हैं। उनके योगदान और उपलब्धियों की कहानियाँ हमारे जीवन को संवारने वाली प्रेरणा का काम करती हैं। अपने समय के ऐसे ही नायकों में से एक के बारे में लिखते हुए मैं उत्साहित भी महसूस कर रहा हूँ। उत्साहित इसलिए क्योंकि यह मेरे लिए एक दुर्लभतम अवसर है कि मैं ऐसे समाजसेवी के बारे में अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकूँ, जो समाज के शीर्ष पर थे और उत्साहित इसलिए क्योंकि यह मेरे अंदर एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है, जब मैं अपनी धरती के सपूत स्वर्गीय लाला गुरुशरण लाल भदान सी.आई.ई. के बारे में लिखता हूँ, जिनके बारे में मैंने उनके बेटे श्री कृष्ण प्रसाद भदानी और अपने पिता धनेश प्रसाद से सीखा था।

गया कॉलेज, गया के संस्थापक अध्यक्ष लाला गुरुशरण लाल भदानी एक योग्य पिता के योग्य पुत्र थे। उनके पिता राय बहादुर रामचंद्र प्रसाद गया शहर के एक प्रमुख व्यवसायी थे। उनका जन्म वर्ष 1902 में गया में हुआ था और अपने जीवन के प्रारंभिक दिनों से ही उन्होंने बहुमुखी प्रतिभा का अद्वितीय गुण दिखाया। यद्यपि वे बहुत ही प्रतिभाशाली छात्र थे, लेकिन पारिवारिक परिस्थितियों ने उन्हें मात्र 17 वर्ष की आयु में पढ़ाई छोड़कर पारिवारिक व्यवसाय में शामिल होने के लिए मजबूर कर दिया। अपनी बुद्धि और दूरदर्शिता के कारण वे बहुत ही कम समय में राष्ट्रीय ख्याति के व्यवसायी बन गए। पारिवारिक व्यवसाय में उनकी कोई रुचि नहीं थी और उन्होंने बड़े उद्योग स्थापित करके अपने पैरों पर मजबूती से खड़े होने का प्रयास किया और जल्द ही वे अपने समय के सबसे बड़े उद्योगपतियों में से एक के रूप में पहचाने जाने लगे। उनका पहला उद्यम 1933 में 'राम चंद्र नागा राम राइस एंड ऑयल मिल्स प्राइवेट लिमिटेड' था। उन्होंने गुरारू चीनी मिल और 1937 में गया कॉटन एंड जूट मिल लिमिटेड का निर्माण किया। लेकिन जल्द ही उन्हें लगा कि गया व्यापार विस्तार के लिए एक छोटी जगह है और इस तरह 1941 में उन्होंने अपनी व्यावसायिक गतिविधियों को कोलकाता में स्थानांतरित कर दिया और सोधपुर ग्लास वर्क्स लिमिटेड खरीद लिया। कोलकाता से उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी व्यावसायिक गतिविधियों की शुरुआत की और जल्द ही कोलकाता और बॉम्बे के बड़े व्यापारिक घरानों की नज़र में आ गए। उस समय के व्यापारिक जगत में वे 'बिहार के लल्ला' के नाम से लोकप्रिय थे।

1946 में उन्होंने मधुसूदन मिल लिमिटेड, बॉम्बे को खरीद लिया और बिहार, बंगाल और बॉम्बे तथा देश के कई अन्य भागों में उद्योगों का जाल बिछा दिया और इस प्रकार राष्ट्रीय स्तर के उद्योगपति के रूप में विशेष पहचान प्राप्त की। वे श्री राम ग्रुप ऑफ़ इंडस्ट्रीज, हिंदुस्तान कमर्शियल बैंक लिमिटेड, भदानी ब्रदर्स लिमिटेड के निदेशक थे और तीन दर्जन से अधिक उद्योगों में निदेशक थे। कपड़ा, रसायन, बिजली, चावल और दाल, शेयर बाजार आदि। वे कई क्षेत्रीय राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संघों के सदस्य थे, जैसे, (1) अखिल भारतीय निर्माता संघ (2) बिहार चीनी नियंत्रण बोर्ड के उपाध्यक्ष, (3) भारतीय चौंबर ऑफ कॉमर्स की समिति, (4) भारतीय केंद्रीय गन्ना समिति, (5) भारतीय खनन संघ, (6) चीनी और शराब खाद्य प्रसंस्करण दिल्ली के प्रबंधक। वे बिहार सरकार के व्यापार सलाहकार और अभ्रक जांच समिति के सदस्य भी थे।

1941 में वे अखिल भारतीय चीनी मिल संघ के अध्यक्ष चुने गए और 1946 में वे फेडरेशन ऑफ इंडियन चौंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज (FICCI) के अध्यक्ष चुने गए। यह दुर्लभ सम्मान पाने वाले वे पहले बिहारी थे। 1945 में इंग्लैंड में आयोजित इंटरनेशनल चैंबर ऑफ कॉमर्स के सम्मेलन में उन्होंने विशेष प्रतिनिधि के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व किया। वे गया कॉलेज, गया सिटी स्कूल और कई अन्य सामाजिक और शैक्षणिक संस्थानों के संस्थापक अध्यक्ष थे।

वर्ष 1955 में हिंदुस्तान कमर्शियल बैंक के निदेशक मंडल की बैठक में भाग लेने के दौरान उन्हें दिल का दौरा पड़ा और वे परलोक धाम चले गए। वे अपने पीछे पत्नी पंकज देवी और पुत्र अर्जुन प्रसाद भदानी, कृष्ण प्रसाद भदानी, मुरली मनोहर भदानी और पुत्री श्यामपति गुप्ता को छोड़ गए। गया कॉलेज, गया के स्थापना दिवस समारोह के दौरान उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करना मेरे लिए खुशी की बात है। चीनी, कपड़ा, रसायन, बिजली, चावल और दाल, शेयर बाजार आदि। वे कई क्षेत्रीय राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संघों के सदस्य थे, जैसे, (1) अखिल भारतीय निर्माता संघ (2) बिहार चीनी नियंत्रण बोर्ड के उपाध्यक्ष, (3) भारतीय चौंबर ऑफ कॉमर्स समिति (4) भारतीय केंद्रीय गन्ना समिति, (5) भारतीय खनन संघ, (6) चीनी और शराब खाद्य प्रसंस्करण दिल्ली के प्रबंधक। वे बिहार सरकार के व्यापार सलाहकार और अभ्रक जांच समिति के सदस्य भी थे।

धनेश प्रसाद : बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व

शिव बचन सिंह, वरिष्ठ अधि०
गया बार कौंसिल

गया कॉलेज, गया के संस्थापक सचिव, धनेश प्रसाद जैसे व्यक्तित्व के योगदान को स्वीकार करना आसान काम नहीं है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे, एक परोपकारी, एक सामाजिक कार्यकर्ता, एक वकील, एक महान संगठनकर्ता और एक विद्रोही थे। सभी गुणों के सथ ही वे गया कॉलेज के शासी निकाय के संस्थापक सचिव थे। उनका जन्म 16 नवंबर, 1914 को एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। उन्होंने 18 वर्ष की आयु में अपने पिता राम नारायण प्रसाद को खो दिया, लेकिन दृढ़ निश्चय और प्रतिबद्धता की भावना के कारण उन्होंने सभी बाधाओं के बावजूद अपने जीवन को आगे बढ़ाया और हर स्तर पर सफलता हासिल की, इससे पहले कि वे गया बार में एक प्रमुख वकील के रूप में अपना जीवन स्थापित कर सकें।

क्रांतिकारी पत्रिका 'चिंगारी' में उनके लेख ब्रिटिश शासन के खिलाफ लय और क्रांतिकारी प्रतिक्रिया को चिह्नित करते हैं, जहां वे सहायक आपूर्ति अधिकारी के रूप में कार्यरत थे। सरकारी नौकरी से उन्होंने इस्तीफा दे दिया और गया बार में शामिल हो गए। अपनी युवावस्था में गया कॉलेज की स्थापना करते समय, यह उनकी गतिशीलता थी, कि वे राष्ट्रीय स्तर के प्रसिद्ध उद्योगपति लाला गुरुशरण लाल भदानी सी.आई.ई. को गया कॉलेज के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में इस पुनित कार्य में शामिल करने में सक्षम हो सके। कॉलेज को 16.04.1962 को मगध विश्वविद्यालय को इसकी घटक इकाई के रूप में सौंप दिया गया था, उस समय प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ के० के० दत्ता कुलपति थे। वे अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, गया के संस्थापकों में से एक थे। वे समय–समय पर पटना विश्वविद्यालय (पटना), बिहार विश्वविद्यालय (मुजफ्फरपुर) और मगध विश्वविद्यालय (बोध–गया) के सिंडिकेट और सीनेट के सदस्य बनते रहे। उन्होंने रोटरी क्लब ऑफ गया के तहत बच्चों के लिए एक स्कूल 'शिशु भारती' की भी स्थापना की। शिक्षा के प्रसार और समुदाय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रति उनका जुनून इतना गहरा था इसे उनके जीवन के अंतिम वर्ष यानी जनवरी 1990 के महीने की एक घटना से समझा जा सकता है। उन्होंने अपने बेटों प्रो. कन्हैया प्रसाद सिन्हा और डॉ. कुमार प्रसाद सिन्हा (एडवोकेट) से बात की और कहा कि उन्हें एक महत्वपूर्ण कार्य पूरा करना है यानी गया के समुदाय को अपने बच्चों के लिए अच्छी स्कूली शिक्षा की सुविधा की आवश्यकता है। उन्होंने अपने बेटों से डीएवी पब्लिक स्कूल, रांची जोन के निदेशक श्री एन.डी. ग्रोवर के साथ एक बैठक आयोजित करने को कहा। श्री ग्रोवर को यह पता चलने पर वे तुरंत गया आए और रोटरी क्लब गया के सदस्यों, गया स्कूल के ट्रस्टियों के साथ बातचीत की। रोटरी चौरिटेबल ट्रस्ट ने इस दिशा में सार्थक प्रयास किए। शिशु भारती स्कूल को डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंध समिति, नई दिल्ली को सौंप दिया गया उनकी इच्छा पूरी हुई। इस प्रकार आजकल डी.ए.वी. ने गया और उसके आसपास के क्षेत्रों में अपना विस्तार कर लिया है, तथा हजारों–हजारों स्कूली छात्रों की जरूरतों को पूरा कर रहा है।

सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने रोटरी क्लब की शुरुआत की; इसके संस्थापक और चार्टर्ड सचिव के रूप में, उन्होंने समुदाय की सेवा की और विशेष रूप से आपदा के समय में उनकी ज़रूरतों को पूरा किया। रोटरी के माध्यम से, इसके स्थापना के वर्ष से ही उन्होंने दिल्ली और अलीगढ़ और यहाँ तक कि जापान से आए डॉक्टरों और पैरामेडिकल के मदद से निःशुल्क नेत्र ऑपरेशन शिविर 'चच्चू दान योजना' का आयोजन किया। वे रोटरी गया के अध्यक्ष थे और वर्ष 1984–85 में उन्हें रोटरी इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट 325, जिसमें बिहार और झारखंड के सभी रोटरी क्लब शामिल थे, के लिए रोटरी डिस्ट्रिक्ट गवर्नर के रूप में चुना गया और बोकारोटन–यू.एस.ए. में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय असेंबली और बर्मिंघम (यू.के.) में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में डिस्ट्रिक्ट का प्रतिनिधित्व किया।

वे वर्ष 1973, 1974 और 1977 में गया बार एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे और वर्ष 1984 में चौथी बार अध्यक्ष बने। उनके कुशल नेतृत्व में ही उन्होंने गया बार के सदस्यों को जे.आर. आंदोलन के पक्ष में संगठित किया। वे श्याम बर्थवार जैसे क्रांतिकारियों से जुड़े थे। वे कई वर्षों तक गया टैक्सेशन बार के अध्यक्ष भी रहे।

धनेश बाबू में मानवीय मूल्यों को समझने की अद्भुत क्षमता थी। वे हर जरूरतमंद की मदद करते थे। वे एक सख्त अनुशासनवादी, मेहनती और परिश्रमी कार्यकर्ता थे और पेशे से लेकर समाज या अपने जीवन के किसी भी क्षेत्र में किसी भी महान उद्देश्य के लिए किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। गया कॉलेज, गया के 08 फरवरी को होने वाले स्थापना दिवस समारोह धनेश बाबू को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है।

ऋषिसत्ता के आधुनिक प्रतीक : विवेकानंद

डॉ० अनूप पति तिवारी
दर्शनशास्त्र विभाग, गया कॉलेज, गया

युवा सन्यासी स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ते में हुआ था। इनका असली नाम नरेंद्र नाथ था। उनके पिता विश्वनाथ दत्त बंगाल के जाने–माने वकील थे। माता भुवनेश्वरी धर्मपरायण सीधी–सादी धर्मनिष्ठ महिला थी। दादा दुर्गा चरण दत्त साधु प्रकृति की व्यक्त थे और स्वामी विवेकानंद को अध्यात्मिक प्रवृत्ति विरासत में अपने दादाजी से ही प्राप्त हुई थी। स्वामी जी के बचपन से ही आध्यात्मिक में रुचि थी और उन्हें धार्मिक तथा आध्यात्मिक प्रश्न को बेचैन किया करते थे। स्वामी जी ने आरंभिक शिक्षा घर पर तथा ईश्वर चंद्र विद्यासागर द्वारा स्थापित मेट्रोपॉलिटन कॉलेज में प्राप्त की। उन्होंने कॉलेज की शिक्षा प्रेसीडेंसी कॉलेज तथा स्काउट जनरल मिशनरी बोर्ड द्वारा स्थापित जनरल असेंबली इंस्टिट्यूट में प्राप्त की। उनके प्रधानाचार्य ने उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर कहा था कि मैं उनके जैसा योग्य छात्र अपने जीवन में कभी नहीं देखा मुझे विश्वास है कि वे जीवन में बहुत नाम काम आएंगे। स्वामी जी कॉलेज की पाठ्यक्रम के अतिरिक्त साहित्य, दर्शन, धर्म और प्राचीन एवं आधुनिक इतिहास का भी अध्ययन किया। 1884 में बी.ए. पास करने के बाद परिवार के भरण पोषण का भार अपने कंधों पर उठाया। स्वामी जी आरंभ से ही जिज्ञासु युवक थे। उनके मनपर ब्रह्म समाज का काफी प्रभाव पड़ा था। किंतु ब्रह्म समाज का संस्थागत स्वरूप उनके आध्यात्मिक जिज्ञासा को शांत न कर सका। उन्होंने अनेक धार्मिक आध्यात्मिक व्यक्तियों से भेंट पर उनकी आध्यात्मिक भोग की शांति तब हुई जब उनका भेंट रामकृष्ण परमहंस से होता है। 1881 में स्वामी विवेकानंद ने दक्षिणेश्वर जाकर स्वामी रामकृष्ण परमहंस के दर्शन किए स्वामी रामकृष्ण ने अपनी आध्यात्मिकता बल पर नरेंद्र की भविष्य संभावनाओं को भांप लिया। नरेंद्र द्वारा स्वामी रामकृष्ण परमहंस के यह पूछने पर की क्या आपने ईश्वर को देखा है ? स्वामी रामकृष्ण सहज भाव से उत्तर दिया हाँ, मैंने ईश्वर को देखा है! इसी तरह जैसे मैं तुम्हें देख रहा हूँ। स्वामी रामकृष्ण के स्पर्श ने स्वामी विवेकानंद के अंदर अभिनव आध्यात्मिक अनुभूति को जन्म दिया। विवेकानन्द लिखते हैं कि उनके स्पर्श ने मेरे भीतर एक अभिनव अनुभूति को जन्म दिया अपनी खुली आंखों से मैंने देखा कि कमरे की दीवारें और सारी चीज जोरों से चक्कर मारती हुई शून्य में विलीन हो गई और सारा विश्व मेरे अहम को लेकर एक रहस्यमयी सर्वव्यापी विश्व चेतना में लीन होते ही जा रहा है मैं पूरी तरह डर गया और मैंने सोचा कि बस अब मैं मरने ही जा रहा हूं, मैं अपने को रोक न सका और चिल्ला उठा अजी यह तो मेरे साथ क्या कर रहे हो ? घर में मेरे माता–पिता हैं, यह सुनकर वे जोरों से हंसे और मेरी छाती को सहलाते हुए बोले ठीक है, अभी रहने दो समय से सब होगा उन्होंने यही कहा त्यों ही सारा अनुभव गायब हो गया। इस प्रकार रामकृष्ण परमहंस ने नरेंद्र को शक्तिपात द्वारा अपनी संपूर्ण शक्तियां प्रदान की और कहा आज तुझे सर्वस्व देकर मैं फकीर बन गया। नरेंद्र को निर्विकल्प समाधि का आनंद की अनुभूति हुई यह वह आलौकिक अनुभूति थी जिसे नरेंद्र इस जीवन में प्राप्त करना चाहते थे। अब नरेंद्र न रहकर स्वामी विवेकानंद हो गए उनके जीवन में भक्ति–कर्म–ज्ञान की त्रिवेणी प्रवाहित होने लगी। स्वामी रामकृष्ण के कहने पर विवेकानंद ने मां काली की उपासना प्रारंभ की वह आजीवन मां काली से यही कहते रहे मां मुझे विवेक दो बैराग्य दो, ज्ञान दो मां तुम्हारी कृपा से मैं सदा ही तुम्हें देख सकूं।

1888 में स्वामी जी ने सारे भारत की यात्रा की। आध्यात्मिक अनुभव के बाद उसकी लौकिक अनुभूति के लिए इस यात्रा में भारत के विभिन्न प्रांतो के रीति रिवाज आचार विचारों का परिचय प्राप्त किया। इसी समय भारत की गरीबी और शिक्षा को देखकर बहुत व्यथित हुए और उन्होंने कह कि ''धर्म भूखे पेट के लिए नहीं है''

1893 में स्वामी जी ने अमेरिका की शिकागो नगर में आयोजित विश्वविद्यालय सम्मेलन में भाग लिया। शिकागो धर्म सम्मेलन में स्वामी जी ने अपना भाषण अमेरिका के भाइयों और बहनों से आरंभ किया। उनके इन आरंभिक शब्दों ने ही वहां के श्रोताओं पर बहुत बड़ा असर किया। धर्म सभा में स्वामी जी का भाषण हिंदू धर्म के आधारभूत सिद्धांतों के व्याख्या पर आधारित था। उन्हें तार्किक शैली में यह सिद्ध किया कि हिंदू धर्म में सांप्रदायिकता और धर्मांधता के लिए कोई स्थान नहीं है। यह धर्म वेदांत के सिद्धांतों पर आधारित होने के लिए विश्व धर्म के रूप में स्थापित है। यदि समकालीन विश्व में किसी एक सिद्धांत की आवश्यकता है, तो वह शक्ति हिंदू धर्म में है वह उसे पूरा कर सकता है। वे कहते हैं कि हिंदू धर्म यह नहीं चाहता कि दूसरे धर्म के लोग अपना धर्म त्याग कर उसकी शरण में आ जाए हिंदू धर्म सिर्फ यह चाहता है कि सभी धर्म को मानने वाले अपने–अपने धर्म का सच्चे मन से पालन करें। इसके अलावा स्वामी जी ने इंग्लैंड की भी यात्रा की अगस्त 1895 में

स्वामी जी ने अपने व्याख्यानों द्वारा इंग्लैंड में काफी ख्याति अर्जित की। यहीं उनकी भेंट मार्गरेट नोबेल से हुई जो स्वामी जी की शिष्य बन गई। जो सिस्टर निवेदिता के नाम से प्रसिद्ध हुई यहीं पर वे प्रसिद्ध भारतविद् मैक्समूलर से भी भेंट किया। इसके अलावा स्वामी विवेकानंद स्विट्जरलैंड तथा जर्मनी में भी गए जर्मनी में उन्होंने सुप्रसिद्ध संस्कृत पाल डायसन से भी भेंट किया।

अमेरिका में स्वामी जी ने कई धर्म सभा को सम्बोधित किए। वे जहाँ भी जाते समाचार पत्रों में खूब छपते। अमेरिका के विभिन्न संस्थाओं और नगरों की व्याख्या देने के लिए आमंत्रित किया गया अमेरिका वासियों के मन में भारत और हिंदू धर्म की प्रति प्रबल आकर्षण पैदा हुआ। बड़ी संख्या में लोग भारतीय संस्कृति से परिचित हूए।

स्वामी विवेकानंद जब भारत लौटे तब भारत में उनके अभूतपूर्व स्वागत हुआ। स्वदेश आने पर उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1893 समिति इसमें रामकृष्ण मिशन की 100 से अधिक शाखाएं देश में कार्य कर रहे हैं मिशन का प्रधान कार्य विधान की शिक्षाओं को व्यावहारिक रूप देना है मिशन के अपने औषधालय विद्यालय छात्रावास पुस्तकालय वाचनालय अनाथालय और प्रकाशन केंद्र है।

दर्शन के क्षेत्र में विवेकानंद वेदांती थे। वह वेदांत की प्रमुख तत्व ब्रह्म जगत तथा माया की व्यवहारिक व्याख्या करते थे। उनका कहना था कि ब्रह्म ज्ञान होने पर जगत और जीवन का इस प्रकार निराकरण हो जाता है। जिस प्रकार रस्सी का ज्ञान होने पर श्रम का निराकरण हो जाता है। ज्ञान ही मोक्ष प्राप्त करने का एकमात्र साधन है। यह ज्ञान मनुष्य भक्ति कर्म योग और साधना द्वारा प्राप्त करता है । मानव मन निरपेक्ष सत्ता की जो उच्चतम धारण कर सकता है वही ईश्वर है यह सृष्टि अनादि है, उसीप्रकार ईश्वर भी आनादि है। स्वामी जी ने अपनी रचनाओं और भाषणों में प्रकृति माया आत्मा अनुभूति ज्ञात जीवन का लक्ष्य मोक्ष योग ध्यान पूनर्जन्म मनोविज्ञान शिक्षा आदि विश्व पर प्रभु विचार किया है। उन्होंने सामाजिक जीवन में जात–पात का विरोध किया धार्मिक कटटरता का विरोध किया। उन्होंने लोकतंत्र समाजवाद का भी संवर्धन किया। वे स्त्री शिक्षा के हिमायती थे। उन्होंने शिक्षा और शक्ति पर अत्यधिक बल दिया अंधविश्वासों की कठोर आलोचना की विदेश में विज्ञान की शिक्षा का प्रसार आवश्यक मानते थे। उनकी दृष्टि में धर्म और विज्ञान का सामान्य मानवता के कल्याण के लिए आवश्यक था। विवेकानंद की सबसे बड़ी देन है कि उन्होंने पराधीन भारतीयों को अपनी सभ्यता और संस्कृति के प्रति गर्व करना सिखाए उन्होंने भारतियों को आत्मविश्वास का पाठ पढ़ाया और देश की सोई हुई चेतना को प्रबुद्ध किया। यह भारत की आध्यात्मिक महानता और सांस्कृतिक गरिमा के प्रशंसक थे, वहीं वे पश्चिम की व्यवहारिकता तथा संगठन शक्ति के भी पोशक थे। वे इन दोनों तत्व भारत की आत्मकथा पश्चिम की काया का संबंध में कर एक नूतन मानवता की सृष्टि करना चाहते थे इसी कारण उनके सिद्धांत को नब्यवेदांत कहा गया। इनहीं संघर्षों के बीच 1902 और अपना अमर संदेश हमलोगों के लिए छोड़ गये।

❖ ❖ ❖

शिक्षा विभाग, गया कॉलेज, गया

गया कॉलेज के प्रो डॉ धनंजय सम्मानित

संवाददाता, गया

गया कॉलेज के शिक्षाशास्त्र विभाग के अध्यक्ष डॉ धनंजय धीरज को यशोदी प्रकाशन नयी दिल्ली की ओर से शिक्षा रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया है. यह पुरस्कार डॉ धीरज के उत्कृष्ट शोध पत्र व पुस्तकों के प्रकाशन एवं शैक्षणिक गतिविधियों में उनके योगदान को लेकर मिला है. डॉ धीरज लगभग दो दशकों से शिक्षा के क्षेत्र में अपनी सेवाएं दे रहे हैं. डॉ धीरज ने पीजी व पीएचडी की उपाधि क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान एनसीइआरटी भुवनेश्वर से की. वहीं अपने कैरियर बतौर शिक्षक राजकुमारी उच्च विद्यालय सिंदुआरी कोच से की थी. फिर मगध विश्वविद्यालय बोधगया शिक्षा विभाग में 2008 से 2016 तक बतौर सहायक प्राध्यापक कार्यरत रहे.

विभाग अध्यक्ष के रूप में उन्होंने अपनी सेवाएं जेजे कॉलेज झुमरी तिलैया कोडरमा (विनोबा विश्वविद्यालय हजारीबाग) प्रदान की. 2017 से गया कॉलेज के शिक्षा शास्त्र विभाग में अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं. डॉ धीरज एनसीइआरटी व एससीइआरटी के साधनसेवी के रूप में निरंतर कार्यशालाओं में अपना योगदान देते आ रहे हैं. इससे पूर्व 2019 में मगध रत्न सम्मान, एक्सीलेंस अवार्ड इन एजुकेशन, इंडियन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन द्वारा स्वर्ण पदक भी प्राप्त कर चुके हैं. उपलब्धि पर कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ सतीश सिंह चंद्र ने डॉ धीरज को शुभकामनाएं दीं. कई राष्ट्रीय शोध पत्र-पत्रिकाओं के संपादक मंडल के सदस्य होने के साथ-साथ डॉ धीरज इंटरनेशनल रिसर्च जनरल ऑफ एजुकेशनल लीडरशिप एंड मैनेजमेंट जिसका प्रकाशन कंटीन्यूअस प्रोफेशनल डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट थैलैंड द्वारा किया जाता है, उसके संपादक मंडल के सदस्य भी हैं.

डॉ धनंजय धीरज को उपलब्धि पर सम्मानित करते प्रिंसिपल.

शिक्षक दिवस पर सम्मान समारोह का निर्णय

गया. माड़नपुर बाइपास रोड में समन्वय संस्था के कार्यालय में एक आवश्यक बैठक हुई. बैठक की अध्यक्षता संस्था के संरक्षक डॉ राधेन नारायण ने की. बैठक में संस्थान की ओर से पांच जिलों के शिक्षकों को शिक्षक दिवस के मौके पर सम्मान समारोह करने का निर्णय लिया गया. इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी होंगे, जिनकी स्वीकृति मिल गयी है. विशिष्ट अतिथि बिहार सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्री डॉ प्रेम कुमार, जहानाबाद के सांसद डॉ सुरेंद्र प्रसाद यादव, मंत्री संतोष कुमार सुमन सहित अन्य जनप्रतिनिधि शामिल होंगे. मौके पर जिला के साहित्यकार व शिक्षक सम्मानित किये जायेंगे. बैठक में डॉ राम सिंहासन सिंह, डॉ राम नारायण सिंह यादव, अभिलाषा वैदेही यादव, रामराज सिंह, अमित कुमार आदि रहे.

पुरस्कार के लिए एचएम वीरेंद्र का चयन

गया. मध्य विद्यालय डिहुरी के प्रधानाध्यापक वीरेंद्र कुमार को प्रतिष्ठित राजकीय शिक्षक पुरस्कार 2024 के लिए चयन किया गया है. पांच सितंबर को शिक्षक दिवस के अवसर पर पुरस्कार श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल पटना में आयोजित राजकीय समारोह में दिया जायेगा. इस पुरस्कार के लिए गया से श्री कुमार के अलावे बिहार के अन्य जिलों से 41 शिक्षकों का चयन किया गया है. बता दें कि वीरेंद्र कुमार सभी शिक्षकों व अभिभावकों के सहयोग से स्कूल में नवाचार में दो स्कूल ड्रेस, होमवर्क डायरी, स्कूल एक्टिविटी, शैक्षणिक एक्टिविटी कैलेंडर दी है. इन्होंने पहली कक्षा के सारे बच्चों को गोद लिया है. उनके शैक्षणिक विकास को लेकर हमेशा कार्यरत रहेंगे. रिटायरमेंट के बाद भी मदद करेंगे. प्रधानाध्यापक वीरेंद्र कुमार के नाम 2019 में राष्ट्रीय टीचर इनोवेशन अवार्ड, 2023 में बिहार स्वच्छ विद्यालय राज्य पुरस्कार, मौलाना अबुल कलाम आजाद राष्ट्रीय आइडियल शिक्षक अवार्ड के अलावे कई संगठनों ने इन्हें विभिन्न मंचों पर सम्मानित किया है. श्रीकुमार ने राजकीय पुरस्कार अपने दिवंगत पिता को समर्पित किया है. उनके पिता भी एक आदर्श शिक्षक थे. बांकेबाजार प्रखंड के तिलैया गांव के रहने वाले वीरेंद्र कुमार पिछले 25 वर्षों से शिक्षक के रूप में अपनी सेवा दे रहे हैं. श्री कुमार 1999 बैच के बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा चयनित शिक्षक हैं. इन्हें राजकीय शिक्षक पुरस्कार 2024 अवार्ड के लिए चयन होने पर डीइओ डॉ ओम प्रकाश, डीपीओ सह नगर प्रखंड के बीइओ प्रिया भारती, बिहार राज्य प्राथमिक शिक्षक संघ गोप गुट के जिला अध्यक्ष मोहम्मद हैदर अली खान, कन्या मध्य विद्यालय डंडीबाग के प्रधानाध्यापक जितेंद्र कुमार, शिक्षिका रीता कुमारी, नवाडीह बांकेबाजार के प्रधानाध्यापक जितेंद्र कुमार, डिस्ट्रिक्ट टीचर वेलफेयर ट्रस्ट के उप सचिव मनोज कुमार सिन्हा, प्रमोद कुमार व अन्य ने बधाई दी है.

A Study of Relationship of Rigidity with Neuroticism and Extraversion

Dr. Ramdeo Prasad
Assistant Professor
P.G. Centre of Psychology
Gaya College, Gaya, Bihar (INDIA)

Rigidity is a dysthymic trait characterized by low extraversion and high neuroticism. Horney (1937) states "by rigidity in reaction I mean a lack of that flexibility which enables a person to react differently to different situations". The rigid person reacts in a particular manner to a situation whenever he faces it, although the conditions may vary. He is unable to utilize novel responses (Roesch. 1960). Constriction and inhibition, intolerance of disorder and ambiguity, conservation, obsessional and perspective tendency, social introversion and anxiety, and guilt the main with neuroticism and extraversion and anxiety, and guilt are the main qualities of rigid persons. But rigidity is also expected to be associated with neuroticism and extraversion as stated above. Eysenck (1953) believes that the lack of objective reference of the introvert's behaviours should lead him to act in a rather rigid, non-adaptive manner while a close objective reference of the extrovert's behaviour should lead him to a non-rigid conformity in behaviours.

Several studies have been conducted to investigate into the relationship or rigidity with extraversion and neuroticism. Eysenck (1947) has hypothesized that introverted neurotics are rigid but it extroverted neurotics are not rigid.

Hence, generally positive relationship should be found between rigidity on the one hand and neuroticism and introversion on the other. In the present study therefore, it was hypothesized that there would be a positive relationship between rigidity and neuroticism and a negative relationship between rigidity and extraversion.

Method :

Sample : The sample comprised of 100 male students of 1st year class of Gaya College, Gaya, (Bihar) selected randomly. They were students of arts.

Test used : In order to measure the extent of rigidity in Ss, a short form (Zellen and Levit, 1954) of the Wesley's (1953) Rigidity scale was used. The scale consisted of 12 items with two response alternative of 'agree' and 'disagree'. The internal consistency reliability of Hindi version of W- R Scale was. 71 (for full length).

To measure extraversion and neuroticism dimensions of personality Hindi version of Eysenck's Personality Inventory (EPI form A was used. The testretest reliablities of neuroticism and extraversion dimensions of personality were. 72 and 71, respectively.

Prodecure : The data were collected in group situation in two sessions. In the first session W-R Scale and in the second session EPI were administered with standardized printed instructions. The relationship between variables, as proposed, was studied using the method of product- moment correlation.

Results And Discussion

In order to study the relationship of rigidity, with extraversion, and neuroticsm, Pearsonian was computed. The obtained values are presented in the table below.

Table - 1

Realtionship of rigidity with neuroticism and extraversion (N=100)

Variable R Significant level   Neuroticism 0.29 0.01   Extraversion 0.12 NS

From the above table it is evident that there is a significant positive

association between rigidity and neuroticism. The obtained r is significant at 0.01 confidence level. This findig confirms our expectation. But the relationship between rigidity and extraversion is statistically insignificant. It means that the two variables are not realy related.

The above finding are partially in agreement with the findings of Eysenck (1947) and Sinha Prasad and Madhuk (1964) because our obtained results do indicate that neurotics would be rigid but they do not support the contention that extraverts would be less rigid. Thus the hypothesis formulated is confirmed by the obtained results with respect to the dimention of neuroticism only. No significant correlation is found between rigidity and extraversion.

Environmental Ethics

Dr. Jyotsana Chaturvedi
Department of Philosophy
Gaya College, Gaya

Environmental ethics is a branch of philosophy that deals with the moral problems related to saving the surrounding environment. That is, the mutual relations between man and the environment are studied in the light of the principles of ethics and moral values. Mainly, the activities of man, that affect the environment are evaluated morally. According to Nature Magazine, environmental ethics is a branch of philosophy that studies the values and actions that affect the environment. It also looks at how society can protect and sustain biodiversity and ecosystems. Environmental ethics is based on the belief that along with man, various animals, plants, and trees living on the earth are also a part of this society. All-natural substances have inherent values; hence all human rights that are claimed by humans also apply to all-natural substances and humans should respect them.

The main principles of environmental ethics are: human responsibility, human justice, the principle of precaution, the right to know, the right to participation, justice and equity, intrinsic value, conservation ethics, deep ecology, respect for nature, and ecology-centred ethics. One should be responsible for the impact of one's actions and decisions on the environment. The rights and needs of all living beings should be respected. Precaution should be taken to avoid environmental damage. There should be a right to access information on environmental issues. Citizens should participate in environmental decisions. Environmental decisions should take into account the principles of justice and equity. The idea that nature has value in itself. The principle that promotes the preservation of the environment for future generations. A holistic approach that values all forms of life. Nature should not be viewed as a resource. Resources should be used responsibly and biodiversity and ecosystems should be protected. Humans have a moral obligation to respect and preserve nature. An approach that places ecological concerns at the forefront of ethical decisions.

Environmental ethics recognizes the interconnectedness of all living organisms and their relationship with ecosystems. This perspective highlights the importance of conserving biodiversity and ecosystems for the well-being of humans and other species. Environmental ethics emphasizes the need for sustainable development, which seeks to meet the needs of the present without compromising the ability of future generations to meet their needs. Environmental ethics outlines the principles of justice and equity in environmental decision-making. It emphasizes the need to consider the effects of environmental degradation on vulnerable communities at the local and global levels. Environmental ethics emphasizes the duties of humans as stewards of the Earth to take responsibility for the care and protection of the environment. This includes adopting practices that focus on reducing environmental damage and the intensity of climate change while conserving natural resources. Environmental challenges transcend national boundaries, which requires global cooperation. Environmental ethics emphasizes the shared responsibility of all nations to tackle common environmental threats.

Why do we need to study environmental ethics? The answer involves these factors: Our modern scientific civilization has enormous impacts on nature, essentially, we must evaluate the policy implications of new scientific activities. Information about nature/modern science explains how we are changing the environment in ways not previously understood, actually raising new policy issues. For example, until the last decade, few believed that human activity could change the global environment. Today, while scientists believe that burning fossils and deforestation have increased the amount of carbon dioxide particles hitting rocks and that this has caused changes in our climate, the emphasis is now on global ethics. Some individualists argue that animals, plants, and even trees have rights. These ideals are a new requirement for environmental ethics.

For most of history, ethics has focused on "human rights", including the rights of the individual, the family, and ethnic communities. However, ethics now includes the rights of animals, plants, and the environment, with rules and uses beyond human rights.

Department of Urdu

Dr. Abdul Hai
Head, Department of Urdu
Gaya College Gaya, Bihar

Welcome to the Post Graduate Department of Urdu at Gaya College. Here we take immense pride in our rich linguistic heritage and our role in promoting the national harmony and unity. Our department is committed to provide a vibrant and stimulating environment for students. The Department of Urdu, Gaya College, Gaya, Bihar is recognized as the prestigious and pioneering departments of Urdu in Magadh University. The department was established in 1944 when the college was established. This is one of the oldest Department of Gaya College. From the beginning the department is known for its renowned faculty members and well known scholars like Prof. Moinuddin Dardai, Prof. I Rafa Hamdani, Prof. Akhtar Quadri, Prof. Shah Mohd Shakeel, Prof. Afsah Zafar, Prof. Alimullah Hali, Prof. Mazhar Hussain etc.

With dedicated and passionate faculty members we strive to inspire our students to achieve academic excellence and develop a deep appreciation for Urdu language and its literary traditions.

Beyond the classroom teaching we organize various events, seminars, Special Lecture and Talks, workshops, debate and writing competitions, poetic sessions that provide our students an opportunity to engage with distinguished authors, Poets and Scholars, fostering a broader understanding and appreciation of Urdu Culture and Literature.

We invite you to join us on this enriching journey and discover the timeless elegance of Urdu. Together, let us celebrate and preserve the legacy of this magnificent language.

Vision : To be a leading centre for Urdu language and literature studies, preserving and promoting the language's rich literary and cultural heritage, while nurturing a passion for lifelong learning and academic excellence.

Mission : To provide a dynamic and supportive learning environment that cherishes student's linguistic, literary and cultural competencies in Urdu.

Name of the Faculty Members

Dr. Abdul Hai (HoD)

Dr. Md Minhajuddin

Students recently Selected for Govt job..

1. Md. Tamjeed Alam, MA (2022-2024), High School Teaher in Nawadah District
2. Md. Minnatullah, MA (2022-2024), High School Teaher in Lakhisarai District

About IQAC Cell

The IQAC cell is a participative and facilitative body which works closely with Faculty members .it's main objective is two plan and execute the best strategies possible for overall and holistic development of the institution. the cell is committed to Adopt innovative teaching learning methods the focus on quality investment and have to a consistent and sustainable plan of action focusing on academic research and programs and to ensure the best infrastructure for the achievement of goals in this regard the IQAC holds regular meetings to discuss the nitty grittiest and chalk out significant measures to enhance deliverance quality and productivity IQAC cell prepares strategies to adopt affordable and innovative approaches to education, and efficient and timely work process.

A Working Committee formed of following IQAC members and other members of the faculty is putting together efforts to submit Annual Quality Assurance Report of the college to NAAC so that college may apply for next cycle of Accreditation.

Dr Arun Garg	Dr Runoo Ravi	Dr Shruti Priya,
Dr Sanjay Tiwari	Dr Dhananjay Dheeraj	Dr Talat Afreen
Dr Richa Singh	Dr Kumari Puja	Dr Vushal Yadav
Dr H. V. Chauhan		

स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग

डा० आनन्द कुमार
विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग
गया कॉलेज, गया

मनोविज्ञान विभाग की स्थापना लगभग 1962 ई. में हुई लेकिन यात्रा का इतिहास गया महाविद्यालय, गया मे काफी पुराना है। विभाग शुरुवात के काल मे गया महाविद्यालय के विकास परिसर मे स्थित था । प्राचार्य डॉ शिवनाथ सिंह (दिवंगत) के कार्यकाल मे विभाग का स्वतंत्र भवन का निर्माण एकता परिसर मे किया गया और दिनांक 30 जुलाई 1997 को नये भवन मे विभाग का स्थानांतरण किया गया जिस भवन का वर्तमान मे 'डॉ. शिवनाथ स्मृति मनोविज्ञान भवन' नाम है। विभाग मे छः वर्ग–कक्षाएं, दो लैब, एक पुस्तकालय, एक परामर्श कक्ष, शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारी कक्ष सह कार्यालय तथा विभागाध्यक्ष कक्ष है।

डॉ. आर. एन. सिंह (दिवंगत) प्रथम विभागाध्यक्ष रहें। जिनका कार्यकाल 1963–1978 तक रहा। वह अनुभवी शिक्षाविद के साथ–साथ बड़े ही कुशल प्रशासक थे। विभाग को शिखर तक पहुंचाने में इनका अहम योगदान रहा। डॉ. सिंह बहुउद्देशीय व्यक्तित्व के धनी थे। उनका कर्मनिष्ठता शिक्षा के प्रति इस कदर था कि अपने कार्यकाल के दौरान कई अन्य महाविद्यालयों का निव भी रखा साथ ही साथ संस्थापक सदस्य भी रहें। इन्होंने बिहार साइकोलॉजिकल एसोसिएशन की स्थापना में अहम भूमिका निभाया । इस संगठन का पहला अधिवेशन गया कॉलेज, गया में किया गया जिसके वह जनरल सेक्रेटरी थे और डॉ. एस.एम. मोहसिन प्रेसिडेंट थे।

विभाग अनुभवी तथा बहुउद्देशीय व्यक्तित्व वाले शिक्षाविद से हमेशा जगमगाता रहा। डॉक्टर सी. एन. दफ्तुआर मनोविज्ञान के क्षेत्र मे एक ऐसा नाम हैं जो किसी पहचान के मोहताज नहीं है। इन्होंने पटना विश्वविद्यालय से पढ़ाई की। वह पूरे भारतवर्ष में पहले ऐसे व्यक्ति थे जो सन् 1985 ई. में आर्गेनाईजेशन बिहेवियर में पोस्ट डॉक्टरेट अर्थात डिलीट की डिग्री हासिल किये । सन् 1964 में आई.आई.टी. खड़गपुर से डिप्लोमा भी किया। वह मनोविज्ञान विभाग, गया कॉलेज गया में विभागाध्यक्ष के रूप में 1978 से 1980 तक अपना योगदान दिए उसके उपरांत वह एम. एस. यूनिवर्सिटी, बड़ौदा में सेवा दिये। उनका स्पेशलाइजेशन कई क्षेत्रों में था पर मुख्य रूप से औद्योगिक मनोविज्ञान, परीक्षण मनोविज्ञान, काउंसलिंग मनोविज्ञान मे उनका महारत हासिल था । उन्होंने पूरे देश–विदेश में अपने ज्ञान का परचम लहराया। वह कई तरह के राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय अवार्ड तथा ऑनर से सम्मानित हुए। दर्जनों शोध पत्र , राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार, कई सारे पुस्तकें, लगभग 16 छात्र–छात्राओं को पीएचडी अवॉर्ड, दो पोस्ट डॉक्टरेट एवं कई सारे डिजरर्टेशन आदि इनके कार्य क्षेत्र मे शामिल है। वह एम. एस. यूनिवर्सिटी बडौदा के मनोविज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष पद पर रहते हुए कई अन्य संस्थाओं के गेस्ट

फैकेल्टी / विजिटिंग फैकल्टी के रूप में भी योगदान दिये एवं राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के सदस्य भी रहें।

डॉ. के. पी. कृष्णा (दिवंगत) विभागाध्यक्ष के साथ साथ अपराध विज्ञान (क्रिमिनोलॉजी) के प्रसिद्ध विद्वान थें। इन्होंने लेक्चरर के रूप मे इंस्टिट्यूट ऑफ क्रिमिनोलॉजी एण्ड फॉरेन्सिक साइन्स, दिल्ली मे भी योगदान दिया तथा दर्जनों शोध पत्र भी प्रकाशित किये। डॉ. डी. सी. कोचर जो कि औद्योगिक मनोविज्ञान के विशेषज्ञ थें इनका पुस्तक औद्योगिक मनोविज्ञान बच्चों के बीच काफी लोकप्रिय था। डॉ. लक्ष्मी सिंह ने भी अपना योगदान प्रयोग तथा परीक्षण के के क्षेत्र में दिया। इन्होंने भी प्रयोग परीक्षण के क्षेत्र में एक पुस्तक की रचना की। डॉ. आर. के. सिंह का योगदान काउंसलिंग मनोविज्ञान के क्षेत्र में काफी ज्यादा रहा।

विभागाध्यक्ष की सूची – 1. डॉ. आर. एन. सिंह (दिवंगत) 2. डॉ. सी. एन. दफ़्तुआर 3. डॉ. आर. एम. पी. सिंह (दिवंगत) 4. डॉ. के. पी. कृष्णा (दिवंगत) 5. डॉ. एस. एच. अशरफ (दिवंगत) 6. डॉ. टी. अख्तर 7. डॉ. ए. के. सिंह 8. डॉ. राजेश्वरी कुमारी 9. डॉ. किशोर कुमार 10. डॉ. रामदेव प्रसाद।

प्राध्यापकों की सूची – डॉ. एन. सी. पी. सिन्हा (दिवंगत), डॉ. आर. एम. पी. सिंह, डॉ. एस. एस. झा, डॉ. आर. के. सिंह, डॉ. एल. सिंह (दिवंगत), डॉ. मो. एम. ए. अंसारी, डॉ. एस. के. सिंह, डॉ. एस. एच. अशरफ, डॉ. टी. अख्तर, डॉ. एस. सिंह, डॉ. आर. एन. सिंह (दिवंगत), डॉ. एच. एन. वर्मा (दिवंगत), डॉ. के. कुमार, डॉ. जावेद अशरफ, डॉ. ए. के. सिंह, डॉ. आर. कुमारी, डॉ. मिश्रा खुशबू अशोक कुमार और डॉ. सुप्रिती सुमन।

विभाग में कार्यरत वर्तमान शिक्षाविद :–

डॉ. आनंद कुमार, विभागाध्यक्ष–सह–सीनियर सहायक प्राध्यापक एवं क्लीनिकल साइकालजिस्ट, स्पेशलाइजेशन–नैदानिक मनोविज्ञान, काउंसलिंग मनोविज्ञान, प्रयोग मनोविज्ञान तथा स्वास्थ्य मनोविज्ञान।

डॉ. रामदेव प्रसाद, सीनियर सहायक प्राध्यापक, स्पेशलाइजेशन–शिक्षा मनोविज्ञान, न्यूरो मनोविज्ञान, औद्योगिक मनोविज्ञान तथा असामान्य मनोविज्ञान।

डॉ. आशा कुमारी – सहायक प्राध्यापिका, स्पेशलाइजेशन– शिक्षा मनोविज्ञान तथा नैदानिक मनोविज्ञान ।

डॉ. मारकंडे पाण्डेय, सहायक प्राध्यापक, स्पेशलाइजेशन–समाज मनोविज्ञान, नैदानिक मनोविज्ञान तथा संज्ञानात्मक मनोविज्ञान।

डॉ. संध्या कुमारी, सहायक प्राध्यापिका, स्पेशलाइजेशन – नैदानिक मनोविज्ञान, विकासात्मक मनोविज्ञान तथा समाज मनोविज्ञान।

डॉ. विशाल यादव, सहायक प्राध्यापक, स्पेशलाइजेशन – संज्ञानात्मक मनोविज्ञान, सकरात्मक मानोविज्ञान, शोध तथा सांख्यिकी मनोविज्ञान।

शिक्षकेत्तर कर्मचारियों कि सूची

श्री अमर कुमार (आर.सी.) श्री हरे राम राय (लैब बिअरर) श्री मनीश प्रताप सिंह (स्टोर कीपर) जो कि वर्तमान मे प्रशासनिक भवन मे कार्यरत हैं।

मिशन तथा विजन –

वर्तमान में लगभग 550 से 600 छात्र–छात्राएं स्नातक तथा स्नातकोत्तर की पढ़ाई विभाग में कर रहे हैं। धीरे–धीरे इसकी क्षमता को और ज्यादा बढ़ाने कि कोशिश करना ताकि ज्यादा से ज्यादा बच्चें लाभान्वित हो सके। ज्यादा से ज्यादा बच्चों का वर्ग में उपस्थित हो। लगातार प्रयास करना कि बच्चों का पढ़ाई की प्रति रुचि बढ़े। बच्चों को मनोविज्ञान के अप्लाइड पक्ष के बारे में जानकारी देना। उनके ज्ञान के शब्दकोश में यह डालना कि आज मनोविज्ञान की उपयोगिता हर एक क्षेत्र में है जैसे व्यक्ति के विकृत व्यवहार या सोच को समझ कर अच्छे व सकारात्मक व्यवहार तथा सोच को विकसित करना। जीवन में कामयाबी के लिए अभिप्रेरणा को सकारात्मक रूप देना अर्थात नैदानिक मनोविज्ञान, पॉजिटिव मनोविज्ञान, स्वास्थ्य मनोविज्ञान, समाज मनोविज्ञान, औद्योगिक मनोविज्ञान, परामर्श मनोविज्ञान, अपराध मनोविज्ञान इत्यादि का उपयोग सीधे व्यक्ति के जीवन, स्वास्थ्य और उसके उन्नति से हैं।

राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार तथा वर्कशॉप का आयोजन करना जिसके माध्यम से एक साथ अनेकों शिक्षाविद तथा विशेषज्ञों का ज्ञान तथा सोच से परिचित किया जा सके। विभाग में काउंसलिंग तथा मनोचिकित्सा केंद्र का निर्माण कर महाविद्यालय के साथ–साथ आसपास के क्षेत्र को मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना। विभाग में कई और डिप्लोमा तथा सर्टिफिकेट कोर्स का आरंभ करना जिससे कि बच्चों को ज्ञान तथा रोजगार दोनों में फायदा हो। बच्चों का इंटर्नशिप हेतु अच्छे–अच्छे मानसिक स्वास्थ्य केंद्र साथ एमओयू करके उनके अप्लाइड ज्ञान को विकसित करना जैसे रिनपास कांके रांची, सी आई पी रांची, निमहान्स बेंगलुरू, इहबास दिल्ली इत्यादि संस्थाएं विश्व प्रसिद्ध हैं।

Department of Philosophy

Dr. Arun Garg
Head, Dept. of Philosophy
Gaya College Gaya, Bihar

The Department of Philosophy (P. G. Centre) is one of the oldest departments of Gaya College, Gaya (A Constituent Unit of Magadh University, Bodhgaya). Professor N. K. Deoraj, the founder Head of this Department who later became Head of Department of Philosophy & Religion at Banaras Hindu University is well-known in the academic world for his pioneering work on Sankara's Theory of Knowledge (1962) and The Philosophy of Culture (1963) and for his thoughts on Creative Humanism. The Department has been enriched over time with the presence of many great scholars and intellectuals such as H. P. Sinha whose books 'Bharatiya Darshan ki Rooprekha' and 'Dharma Darshan ki Rooprekha' serve as text books in the Philosophy Departments. It is noteworthy here that many philosophers of international repute have visited the Department from time to time and delivered special lectures on various areas of Philosophy. The Department has also been organizing many academic events like World Philosophy Day, National Seminars etc. under the aegis of ICPR and other National funding agencies.

Heads of Department

1. Dr. N.K. Devraj, 2. Dr. Jagat Moharn Prasad, 3. Dr. Ramashankar Srivastav, 4. Dr. Baidya Nath Sayah, 5. Dr. Brajkisor Prasad, 6. Dr. Umeshwari Prasad, 7. Dr. Ram Sarekh Singh, 8. Dr. Dinesh Singh, 9. Dr. Bhikhari Ram Yadav, 10. Dr. Raghvendra Pandey, 11. Dr. Bina Sharan, 12. Dr. Smt. Shashi Singh, 13. Dr. Arun Garg.

The Department offers wide range of specializations to its students to learn from various fields of Philosophy such as Indian Philosophy, Western Philosophy, Contemporary Indian Philosophy Analytical Philosophy, Continental Philosophy, Ethics, Philosophy of Religion, Philosophy of science, Philosophy of Logic, Epistemology, Metaphysics, Socio Political Philosophy. To preserve our rich heritage and legacy, our department is making sincere efforts to maintain high standard of teaching. The faculties of the department have independently contributed a lot to the expansion of philosophical knowledge by bringing out books and publishing research papers, apart from delivering lectures at different forums. The vision and mission of the Department is to keep the lamp of learning ablaze through our efforts to maintain high standard of teaching. The department offers two years Post-Graduate Course (Master of Arts in Philosophy) and four years (Bachelor of Arts in Philosophy) with the updated curriculum of the Choice Based Credit System.

List of current Faculties as on 24.10.2024 :

1. Dr. Arun Garg (Head of Department), 2. Dr. Anoop Pati Tiwari, 3. Dr. Kumari Puja, 4. Dr. Anup Prasad, 5. Dr. Jyotsna Chaturvedi, 6. Dr. Pankaj Kumar Bharti

Department of Political Science

Dr. Sanjay Tiwari
Head, Dept. of Pol. Science
Gaya College Gaya, Bihar

The Department of Political ScienceThe Department offers courses from Undergraduate to the Post Garaduate level.It studies the theory and practice of the Government at the Local , State , National and International level. From teaching of Political theory to Theories of International relations the department caters to the needs of the students coming from various backgrounds.

गया कॉलेज स्किल सेंटर

इस अभिनव प्रकल्प का उद्घाटन माननीय कैबिनेट मंत्री श्री जीतनराम मांझी, कुलपति मगध विश्वविद्यालय, बोधगया प्रो० शशि प्रताप शाही, प्रधानाचार्य डॉ० सतीश सिंह चंद्र, आई०सी०आई०सी०आई फाउण्डेशन के निदेशक के द्वारा 20 जनवरी, 2025 को किया गया।

गया स्किल सेंटर का उद्देश्य युवाओं और वंचित समुदायों को कौशल–आधारित प्रशिक्षण प्रदान करके उनकी रोजगार क्षमता और उद्यमिता को बढ़ाना है। इसके मुख्य उद्देश्य हैं :–

1. **कौशल विकास** : विभिन्न उद्योगों में व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना।
2. **रोजगार सृजन** : नौकरी चाहने वालों और नियोक्ताओं के बीच की खाई को पाटना।
3. **उद्यमिता समर्थन** : स्वरोजगार को बढ़ावा देना और छोटे व्यवसायों को प्रोत्साहित करना।
4. **क्षमता निर्माण** : तकनीकी, सॉफ्ट स्किल्स और डिजिटल कौशल को विकसित करना।
5. **सामाजिक समावेश** : महिलाओं, दिव्यांगजनों और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को सशक्त बनाना।

इस केन्द्र द्वारा उद्योगों से जुड़े कोर्स (इलेक्ट्रिकल और होम अप्लायंस कोर्स, ऑफिस एडमिनिस्ट्रेशन कोर्स आदि)। सरकारी मान्यता प्राप्त और प्रमाणित प्रशिक्षण कार्यक्रम। प्रैक्टिकल लर्निंग, कार्यशालाओं और इंटर्नशिप के माध्यम से व्यावहारिक प्रशिक्षण चलाए जा रहें हैं।

कोर्स का उद्देश्य :–

इस कोर्स का उद्देश्य छात्रों को इलेक्ट्रिकल और घरेलू उपकरणों की मरम्मत, रखरखाव और इंस्टॉलेशन से जुड़ी तकनीकी जानकारी और व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना है। यह कोर्स उन लोगों के लिए फायदेमंद है जो इलेक्ट्रिशियन बनना चाहते हैं या घरेलू उपकरणों की सर्विसिंग और रिपेयरिंग में करियर बनाना चाहते हैं।

Kala Bharti

Dr. Pankaj Bharti

Kala Bharti as a cultural body of the college ensure the preservation and promotion of the same within the student community. Kala Bharti plays an important role in making students believe the importance of art and aesthetics in life. It teaches students that art is an essential factor that makes the human living possible. It make us travel time, allowing us to connect with the past and understand the evolution of human civilization. Engaging with Kala Bharti fosters creativity and imagination towards making society a beautiful place to live. Kala Bharti has always remain a powerful tool for social commentary, challenging societal norms, raising awareness about important issues, and inspiring social change within students. It also develop in students a critical outlook. Kala Bharti plays a pivotal role in bringing people together, fostering a sense of community and shared experience. It encourages students to recognise and acknowledge, the contribution of Bihar folk tradition that has immensely shaped the community feeling that flows across the region and culture.

The Linguistic Face of Gaya

Dr. Rajesh Kumar Mishra
Head, Dept. of Pali & Buddhist Studies
Gaya College Gaya, Bihar

one of the most sacred cities in India, holds immense religious and historical significance for both Hindus and Buddhists. The city is linguistically diverse, shaped by centuries of cultural and religious interactions. The influence of Lord Vishnu, associated with the Vishnupad Temple, and Lord Buddha, linked to Bodh Gaya, has contributed to the linguistic landscape of Gaya. This paper explores the linguistic evolution of Gaya, highlighting the interplay of Sanskrit, Pali, Magahi, and other regional languages in shaping its cultural identity.Linguistic Heritage of Gaya.

1. **Sanskrit and the Vishnupad Tradition:** Sanskrit has been the dominant liturgical language of Hinduism, deeply rooted in the rituals and traditions of the Vishnupad Temple in Gaya.The Pind Daan (ancestral offerings) rituals, performed by Hindu pilgrims, use Sanskrit hymns from texts like the Garuda Purana and the Vishnu Smriti.Many Vedic scholars and priests (Pandas) in Gaya still use Sanskrit in their religious ceremonies, keeping the tradition alive.

2. **Pali and the Buddhist Influence in Bodh Gaya:** Bodh Gaya, the place of Buddha's enlightenment, is a center for Pali language studies, as Pali is the sacred language of Theravāda Buddhism.The Bodh Gaya inscriptions, found in ancient monasteries, reflect Pali and early forms of Prakrit.Buddhist monks from Sri Lanka, Thailand, Myanmar, and other Buddhist countries continue to use Pali in chanting and scriptural studies at the Mahabodhi Temple.

3. **Magahi:** The Vernacular of the Region:Magahi, an Indo-Aryan language, is the mother tongue of the local population and serves as the bridge between the Sanskritic Hindu tradition and the Pali-Buddhist heritage.It is widely spoken in the villages surrounding Gaya and serves as a medium of communication for pilgrims and local traders.Historically, Magahi evolved from Magadhi Prakrit, which was the language of Lord Buddha's sermons . The ancient form of Pali known as Magadhi , Aacharya Budhaghosa derived Pali as a language of Magadha "Sa Magadhi Mul Bhasa Narayayadikappika , Brahmuna cassutalapa Sambuddha capi bhasare" . it indicates that the origin of Pali is related to the region of Magadha .

4. **Hindi and Urdu:** The Contemporary Lingua FrancaHindi, as the official language of Bihar, is widely spoken in Gaya, used for administrative purposes, tourism, and daily communication. Urdu, historically linked to Mughal rule and Sufi traditions in Bihar, is also spoken in parts of Gaya, particularly among the Muslim community.Linguistic Interactions and Cultural Synthesis: The coexistence of Sanskrit (Hindu tradition) and Pali (Buddhist tradition) in Gaya represents a unique linguistic synthesis. Magahi serves as a common linguistic thread, linking both traditions with the local community.The linguistic diversity reflects the harmonious religious and cultural co-existence that has defined Gaya for centuries.

The linguistic face of Gaya is a reflection of its rich spiritual and historical heritage. The sacred languages Sanskrit and Pali continue to influence Hindu and Buddhist traditions, while Magahi, Hindi, and Urdu serve as practical means of communication. With English playing a growing role in global interactions, Gaya remains a linguistic and cultural crossroads, preserving its ancient traditions while embracing modernity.

Department of Commerce

Dr. Panna Lal
Head, Dept. of Commerce
Gaya College Gaya, Bihar

Department of commerce Department of commerce is the biggestand reachest department of gaya college gaya according to student admission. The courses running at graduation and post graduation level . The department also offer some professional courses like cs,cna, cfa and MBAThis department is headed by Dr Pannalal . Professor Anand Prakash,Dr Manish Kumar Dr Pankaj Kumar mahto is distinguish teacher of this department.

Gaya College : At a Glance

Gaya College, Gaya was established on the 8th February, 1944 on the eastern side of the legendary Phalgu River with a vision of "enlightenment and personality development of younger generation through education to make them an asset to the nation".

The chief intent of the mission was to impart quality teaching in various disciplines of high education. It is blessed with a wide sprawling campus having more than 57 acres of land. The college is proud of being the first constituent unit of Magadh University, Bodh Gaya, which was established in 1962. PG teaching started at Gaya College campus itself in 1983.

In February, 2014 the College was reaccredited by NAAC with grade - A (CGPAC : 3.23). In 2010 the UGC has granted CPE status to the college.

Gaya College imparts UG & PG teaching in the faculties of Arts (Humanities & Social Science), Science, Commerce and Management along with inter-disciplinary Vocational Courses. The College has consistently maintained high academic standards which are reflected in better results of College students.

Gaya College has developed infrastructure for academic, research, administrative and sports facilites. There are well maintained building structures spreading over the huge campus of the College. It has well equipped laboratories and Seminar Libraries catering to the needs of curriculum and research. The College has a Central library. Computer Labs with Internet facility, audiovisual equipment and smart classrooms for almost all the departments and other facilities like floricultural gardens, large playgrounds, sports complex and hostels for boys and girls.

With the UGC assistance during XI Plan Period, coaching Centre for NET/Remedial Teaching/Entry in Service has established. Career Counselling & Guidance Centre and Equal Opportunity Centre have been established under the supervision of Psychology Department. A UGC-Netw'ork Centre has also been established in the main adiministrative building with Internet connectivity. The College also has Study Centres of IGNOU.

HIGHLIGHTS

- Established in Feb., 1944
- 57 acres campus.
- Premier constituent college of Magadh University.
- NAAC accredited wih Grade-A (CGPA:3.23).
- CPE Status Second Cycle by UGC
- 20 UG Programmes.
- 16 PG Programmes.
- 07 self-financing UG programmes in vocational courses
- 04 self-financing PG programmes in Management & Computer Applications.
- Well furnished Conference Hall.
- NCC & N.S.S. for boys and girls
- Community College Courses.
- Around 20,000 enrolments with 27% girls in Intermediate, UG, PG, Vocational & Professiona courses.
- 89-95% success rate at the Univeristy exams.
- 137 sanctioned posts of teaching faculty.
- Well maintained huge infrastructure
- Central Library with 85000 volumes & Journals.
- Computerised admission & accounts.
- Separate Hostels for Boys & Girls.
- Auditorium, Conference rooms, playgrounds and sports stadium.
- Remedial courses for weaker section of students..
- Housing IGNOU study centre with 2938 enrolment.
- Wi - fi facility
- Automated Library facility.
- Indoor Badminton Court.
- Well Equipped Gymnazium

New Delhi and Directorate of Distance Education, M.U. Bodh-Gaya to promote distance education in various disciplines.

Students are availing the benefits of placement, seminar, remedial coaching, group discussion, regular tutorial, academic tour and industrial visit. In view of the changing social spectrum, the emphasis is also given on the skill component besides the traditional knowledge component. The College has been diversifying teaching prorammes during the last two decades by introducing Management, Computer Applications and other Vocational Courses.

In order to foster civic and social values among the students, interaction sessions, outreach activities and field study in surrounding areas are organized by departments. Issues connected with health, environment, culture, social and political awareness have been taken up.

The College has promoted research orientation among faculty members from its early period. About 85% of the faculty members are actively engaged in research. Almost all of them have accomplished their Ph.D. programmes in various subjects. The teachers of the College attend orientation and refresher courses to update their knowledge and skill and also participate in other universities as Resource persons in orientation/Refresher programmes.

Teachers suplement class room instructions with formal and informal evaluation of students' strength and weakness, and do necessary need-based counselling. They take periodic feedback from students about the quality and standard of classroom teaching and also about the campus experience and infrastructural condition of the college.

Being constituent unit of Magadh University, the College is run and managed as per provisions of the University Act and Statutes. Principal is the administrative and academic incharge of the college. The college receives grants from the State goernment as well as the University Grants Commission for salary and infrastructural development.

The College practices the policy of collective decision-making. Various internal committees are functioning to maintain and enhance the academic, research, administrative and financial management of the college. For smooth management of various internal activities, the College has estiblished permanent Examination Control Room, Proctorial Board, Athletics Centre, Kala Bharti, NCC/NSS office, Computerised Admission & Accounts Section, etc. The Bio-metric attendance is fully functional in this College.

The Internal Quality Assurance Cell (IQAC) is functioning to monitor and improve academic and administrative functioning of the College. The Research Promotion Cell facilitates research activities and extenstion programmes and co-curricular activities undertaken by diffrent departments and societies of the college.

The College is proud of producing large number of high profile alumni in different fields in India and abroad. We have a registered Alumni Association. The College organized International Science Confrence in 2010 which was inaugurated by H.E. the president of India Dr. A.P.J. Abdul Kalam.

❖ ❖ ❖

Gaya College : Highlights

Important Events

Gaya College, Gaya is an institution of higher education with a difference. At the very initial stage the founders laid more emphasis on imparting quality teaching and interaction with men of excellence in their fields by inviting them to the institution. The following are the memorable moments of this institution.

❖ 1944,8th Feb.	-	The College was founded at Janakpur, Manpur, Gaya on the eastern bank of legendary river Phalgu by Dhanesh Prasad as founder secretary.
❖ 1944,22nd Feb.	-	Inagurated by Hon'ble Sachchidanand Sinha.
❖ 1947, 28th March	-	Inauguration of (present campus comprising 57 acreas of land) by Dr. Rajendra Prasad, the then Food Minister and the first President of India.
❖ 1959, 1st March	-	The foundation stone of Science Block (housing presently the Department of Botany and Poltical Science) was laid by Bihar Kesari Dr. Shree Krishna Singh, the first Chief Minister of Bihar.
❖ 1944-1951	-	Affiliated to Patna University
❖ 1952 Jan.-1962 Feb.	-	Affiliated to Bihar University, Muzaffarpur (presntly BRAU, Muzaffarpur)
❖ 1961,14th Sept.	-	The foundation stone of the Common Room (presently Examination Department) was laid by the then Education Minister and Ex-Chief Minister of Bihar, Sri Satyendra Narayan Sinha.
❖ 1962, 1st March	-	Magadh University was established.
❖ 1962, 16th April	-	Became the first Constituent Unit of Magadh University.
❖ 1963,,19th Jan.	-	The first convocation of Magadh University was held at Gaya College on the Sports Ground lying South to the Campus. It was addressed by Hon'ble Chief Justice of Supreme Court of India Sri B.P. Singh.
❖ 1966	-	Postgraduate Teaching in Science faculty of Magadh University started at Gaya College, Gaya.
❖ 1967, 15th Dec.	-	The fifth and the last convocation of Magadh University was Addressed by Dr. Kali Das Bhattacharya, the Vice-Chancellor of Vishva Bharati University, Shantiniketan.
❖ 1969, 15th Dec.	-	The Office and other Departments of the University were shifted to the newly construced campus of Magadh University at Bodhgaya.
❖ 1969	-	Silver Jubilee of the College was celebrated.
❖ 1983	-	Postgraduate teaching started at Gaya College, Gaya.
❖ 1994	-	The Golden Jubilee of the College was celebrated
❖ 2008	-	Grade "A" was accorded by the NAAC
❖ 2010, 11th Feb.	-	Hon'ble Dr. APJ Abdul Kalam, Ex-President of India inaugurated the Third Bihar Brain Science Congress.
❖ 2010	-	CPE (College for Potential Excellence) status was accorded by the UGC
❖ 2012	-	THE BI-CENTENARY year of the great English novelist Charles Dicens, 150th birth anniversary, the first Nobel Laurearte of Asia Rabindra Nath Tagore and the Golden Jubilee year of Magadh University were celebrated. The Centenary Year of Bihar State was celebrated on the Campus.

- ❖ 2013 - UGC sponsored National Seminars in five subjects were organized. Sri P K Shahi, Education Minister of Bihar Inaugurated the newly constructed building of Bio-technology.
- ❖ 2013 - UGC Diamond Jubilee year was celebrated
  - Community College was launched by the UGC.
  - NUSSD by Tata Institute of Social Science-Academic Tie-up.
- ❖ 2014 - The College was Re-Accredited with Grade "A" by the NAAC.
- ❖ 2015 - 150th year of formation,of Gaya District was celebrated.
  - Second Cycle of CPE Status by UGC.
  - C-DAC-Advanceed Study Centre sponsored by IT Dept., Govt, of Bihar.
- ❖ 2016 (12-13 Nov.) - National Seminar on "Enviorment Pollution and Bio-Diversity conservation" by the Deptt. of Zoology.
- ❖ 2016 - Pre-Ph.D. Course Work launched in the Faculty of Management.
- ❖ 2016, 10-12 Dec. - International Seminar on "Lord Buddha and Environment".
- ❖ 2017 - Foundation day (73rd) was celebraed on 22nd Feb. 2017.
  - Registered Alumni Association Meet held on 27th April 2017.
  - B.Ed. Course (NCTE & M.U. approved) started.
- ❖ 2017, 19th January - National Seminar on "Relevance of Sanskrit"
- ❖ 2018, 8th Sept. - National Seminar on "Music and world Peace"
- ❖ 2018, 20-22nd Dec. - National Seminar organised by of Psychology on "Human Wellness" A Multi - Disciplinary Approach.
- ❖ 2019, 8th Feb. - Diamond Jubilee of the College was celebrated.
  - The statue of the Sri Gordhamen Dalmia who donated the building and land for the college, was installed & inaugurated on the campus.
- ❖ 2021, 9th Sep. - National Webinar "Project Proposal, Report Writing and Funding organic, organised by Department of Education & IQAC Cell.
- ❖ 2022, 15th Oct. - Seminar organised on Women Empowerment by Department of Education and District Administration.
- ❖ 2023, 4th Mar. - वैश्विक शांति की स्थापना मे बुद्ध के विचारों की प्रासंगिकता, स्नातकोत्तर पालि एवं बौद्ध अध्ययन विभाग द्वारा आयोजित व्याख्यान।
- ❖ 2023, 20-21st Mar. - International Conference on "Sustainable Economics Development of India : Issues Challenges and Opportunities".

❖ ❖ ❖

GAYA COLLEGE FAMILY
TEACHER

S.N.	Name	Blood Gr.	Address	Email	Mobile
	Prof. (Dr.) Satish Singh Chandra	**B+**	**Principal**	sscrago@gmail.com	**9430894586**
	Mr. Adarsh Kumar Gupta	**B+**	**Bursar**	adarsh.econ@gmail.com	**9582845270**
			DEPT. OF BOTANY		
1.	Dr. Talat Afreen		White House Compound, Gaya,	talatafreen09@gmail.com	9305521778
2.	Dr. Vinay Shankar		Ashok Nagar, Gaya,	drvinaydu@gmail.com	9910362856
3.	Dr. Moni Kumari		A. P. Colony, Gaya,	mona.jnu10@gmail.com	7903797440
			DEPT. OF CHEMISTRY		
1.	Dr. Birendra Kumar	O+	Vaishali Complex, C. P. Colony, Gaya		9471004379
2.	Dr. Richa Singh		Ashok Nagar, Gaya		8707232726
			DEPT. OF MATHEMATICS		
1.	Dr. H. V. Singh Chauhan		Doymihapur, U. P.		9911424224
2.	Dr. Richa Tripathi		Ariyari, Ashara, U. P.		7509336393
			DEPT. OF PHYSICS		
1.	Dr. Ashutosh Kumar		Ashok Nagar, Gaya		9936930531
			DEPT. OF ZOOLOGY		
1.	Dr. Reshma Yasmin		Haridas Chatterjee Lane, Gaya,	yasminreshman@gmail.com	9431272176
2.	Dr. Md. Rashid Nayeem		Behind Elegant School, Gaya.	rashidnayeem48@gmail.com	6202222703
3.	Dr. Archana Kumari		Opp. Rampur Thana, Gaya,	archana.jwc@gmail.com	9308991717
			DEPT. OF ANCIENET INDIAN & ASIAN STUDIES		
1.	Dr. Kunal Kishore		Khiri, Atri, Gaya	kishore16kunal@gmail..com	9955348045
			DEPT. OF ECONOMICS		
1.	Adarsh Kumar Gupta	B+	Near Bisar Tank, Gaya,	adarsh.econ@gmail.com	9582845270
2.	Dr. Shruti Priya	A+	58, K. P. Road, Gaya.	shrutipriyaeco@gmail.com	9304311213
3.	Dr. Chandrika Soni	O+	Station Road, Gaya,	soni.chandrika25@gmail.com	8299432436
4.	Dr. Rajeev Kr. Kanaujiya		Katari Hill Road, Gaya	rajeev.bhu017@gmail.com	9889443382
5.	Dr. Tareef Husain			tareefhussain.amu@gmail.com	9016986608
6.	Dr. S. S. Sarkar		A. P. Colony, Gaya	saritsawarkar@gmail.com	7550430933
7.	Dr. Rajan Kumar		A. P. Colony, Gaya	agranirajan@gmail.com	9708361315
			DEPT. OF ENGLISH		
1.	Dr. Md. Sadique	B+	Aliganj, Rd. No. 12, Gaya		9934002426
2.	Dr. Atal Kumar	A+	Lakhibagh, Manpur, Gaya		9934063561
3.	Dr Runoo Ravi	A+	Jail Road, Gaya		9431702855
			DEPT. OF GEOGRAPHY		
1.	Dr. Bibha Singh	AB+	Gewal Bigha, Durgasthan, Gaya		9835697859
2.	Dr. A. Pathak	B+	Shastrinagar, Girl's H.S. Rd -5, Gaya		9430056236
			DEPT. OF HISTORY		
1.	Dr. Sunil Kumar Singh	A+	L145. Housing Board, Gaya.	sunilkrsingh1160@gmail.com	9905455049
2.	Dr. Snehlata Kumari	AB+	Lakhibagh, Manpur, Gaya,	sneh98@gmail.com	9973025227

S.N.	Name	Blood Gr.	Address	Email	Mobile
			DEPT. OF HINDI		
1.	Dr. Ramuday Kumar		Usri Chakiya, Arwal	kramuday@gmail.com	9430055338
2.	Dr. Sonu Annapurna	B+	Raj Palace, Flat No. 102, Paharpur, Gaya		8340572846
3.	Dr. Shreedhar Karunanidhi			shreedhar0080@gmail.com	7004945858
4.	Dr. Jitendra Kumar				7488847727
5.	Dr. Ravi Kumar		Ashok Nagar, Gaya	dr.ravipatna@gmail.com	9304715146
6.	Dr. Priyanka Kumari			1993priyankarai@gmail.com	7254050857
			DEPT. OF PALI		
1.	Dr. Rajesh Kumar Mishra		A. P. Colony, Gaya	rajeshkmishra83@gmail.com	8005465870
			DEPT. OF PHILOSOPHY		
1.	Dr. Arun Garg		204, Saraswati Kunj, Gaya	arungarg1301@gmail.com	7888421193
2.	Dr. Anoop Pati Tiwari		A. P. Colony, Gaya	anooppatitiwari@gmail.com	7754939655
3.	Dr. Anup Prasad		Tekari, Gaya		8825282489
4.	Dr. Kumari Puja		Magadh Colony, Gaya		8404840186
5.	Dr. Jyotsna Chaturvedi		Ashok Nagar Colony, Gaya		9628822869
6.	Sri Pankaj Kumar Bharti		Near Airpot, Gaya		9555242134
			DEPT. OF POLITICAL SCIENCE		
1.	Dr. Sanjay Tiwari		Delha, Gaya,	sanjaytiwari024@gmail.com	7017596359
2.	Smt. Sweeti Gupta		Near Magadh Medical College, Gaya		7903091918
3.	Dr. Ashok Kumar				
			DEPT. OF PSYCHOLOGY		
1.	Dr. Ramdeo Prasad		Raghopur Powa, Fatehpur, Gaya		9934932026
2.	Dr. Anand Kumar			dranandpsychology@gmail.com	7004427074
3.	Dr. Asha Kumari				9097635856
4.	Dr. Markandey Pandey				9709875589
5.	Dr. Sandhya Kumari				9471888263
6.	Dr. Vishal Yadav				9889700494
			DEPT. OF SANSKRIT		
1.	Dr. Sangita Arya			s.vaidiki@gmail.com	7376159523
2.	Dr. Brahmchari Pandey (visiting faculty)		Chandchaura, Gaya		9431409234
			DEPT. OF SOCIOLOGY		
1.	Dr. Kishor Kumar		A. P. Colony, Gaya	kishorkumar209@gmail.com	8987395718
2.	Smt. Preety Chandra		Domuhan, Bodhgaya	chandanpreety15@gmail.com	9798976021
3.	Dr. Nilima Kumari (visiting faculty)		A. P. Colony, Gaya		9852282241
			DEPT. OF URDU		
1.	Dr. Abdul Hai	O+	Karimganj, Barachatti, Gaya	ahaijnu@gmail.com	9899572095
2.	Dr. Md. Minhajuddin	A+	Karimganj, Gaya	khanminhaj762@gmail.com	9304720184
			DEPT. OF COMMERCE		
1.	Dr. Anand Prakash	B+	Chowk Road, Tutwari, Gaya		9934083483
2.	Dr. Panna Lal		Manpur, Patwa Toli, Durasthan, Gaya		9313332958
3.	Dr. Manish Kumar		Mohan Nagar, Gaya		9471276868
4.	Mr. Pankaj Kumar Mahto		Ashok Nagar, Gaya		9831569257
			SPORTS & GAME		
1.	Sri Anjani Kumar	A+	91, LIG, SBS Col. Mustafabad, Gaya		7277700394

S.N.	Name	Blood Gr.	Address	Email	Mobile
			EXAMINATION DEPARTMENT		
1.	Dr. Sunil Kumar Singh		Controller of Examination, Dept. of History		9905455049
2.	Dr. Md. Ilyas				9430073347
3.	Sri Pramod Kumar Sinha		Asstt. Controller of Examination		9199097182
4.	Sri Yogendra Singh		Peon		7634005397
5.	Md. Zeyauddin		Peon		7523054200
			PROCTORIAL BOARD		
1.	Dr. Bibha Singh		Proctor (Geography)		9835679859
2.	Dr. Arun Garg		Proctor (Philosophy)		7888421193
3.	Dr. Ramdev Prasad		Proctor (Psychology)		9934932026
4.	Dr. Panna Lal		Proctor (Commerce)		9313332958
5.	Sr. Santosh Kumar Singh		Proctor (Office)		7277674861
6.	Sri Manish Pratap Singh		Proctor (Office)		9801873888
			CENTRAL LIBRARY		
1.	Dr. Md. Rashid Nayeem		S. P. Road, Gaya		9931850590
2.	Sri Kundan Kumar	O+	Gewal Bigha, Munni Masjid, Gaya		7759801264
3.	Sri Durgesh Kumar Suman		Kujapi, Gaya		8178688529
4.	Sri Parmeshwar Yadav		Mustafabad, Gaya		7870260588
5.	Sri Yogendra Kumar		Rampur, Gaya		9939886404
6.	Sri Umesh Kumar		Lalunagar, Police Lane, Gaya		7970633575
7.	Smt Shanti Devi	O+	Mustafabad, Gaya		7257813499
			NODAL OFFICER IT		
1.	Sri Amarjeet Kumar		Teacher's Quater Gaya College, Gaya		9852220554
			DEPT. OF BUSINESS ADMINISTRATION		
1.	Dr. Kr. Ambarish Narayan		B+ Tekuna Farm, Bodhgaya,	kanarayan.edu@gmail.com	9473131111
2.	Mrs. Amrita Sinha	A+	Bhagalpur, Bodhgaya,	amritasinha9623@gmail.com	9931649623
3.	Mr. Ajeet Raj	B+	Chhotki Nawada, Gaya,	rajajeet1225@gmail.com	8709159748
4.	Dr. M. P. Yadav	O+	Shastri Nagar, Gaya		9931884007
5.	Dr. Sushant Kr Mukherjee	O+	East Ramsagar Road, Gaya	skmukherjee21@gmail.com	9204333817
6.	Dr. S. K. Pathak		Chakand Bazar, Gaya		9546798116
			DEPT. OF INFORMATION TECHNOLOGY		
1.	Md. Shadab Ilyas	B+	Maroofganj, Gaya	shadabilyas@gmail.com	9931990892
2.	Md. Masud Alam	O+	New Aliganj, Gaya	masudgcg@gmail.com	9973014158
3.	Mrs. Bharti Singh	B+	Sikaria More, Gaya		7991188982
4.	Smriti Mishra	AB+	Vaishali Complex, C.P. Colony, Gaya	smriti.gaya@gmail.com	8292251268
5.	Dr. Jolly Pandey	O+	Circuit House, Gaya,	jollypandey211@gmail.com	9934349595
6.	Md. Rashid	A-	Aliganj Rd. No. 14, Gaya ,	mdrashid9504@gmail.com	7294804087
7.	Ashwani Kumar		North Lakhibag, Manpur, Gaya,	ashwanikumar01mubodhgaya@gmail.com	9110122503
8.	Md. Faizan Sarwar	O+	Road No. 14A, Aliganj, Gaya,	faizan9371@gmail.com	9801669105
9.	Satyam Saurav		J. P. Nagar, Gaya,	satyamsinghshombanshi@gmail.com	6206183311
10.	Safia Sultana	A-	New Aliganj, Gaya,	safiasultana128@gmail.com	6200903042

S.N.	Name	Blood Gr.	Address	Email	Mobile
	DEPT. OF BIO-TECHNOLOGY				
1.	Dr. Archana Kumari		Opp. Rampur Thana, Gaya		9308991717
2.	Dr. Murlidhar Mishra		Rajendra Ashram, Gaya,	murlidharmishra25@gmail.com	9546699672
3.	Dr. S. M. Shakil Ahmad		New Karimganj, Gaya,	shakilahmadbotany@gmail.com	7870413990
4.	Kumari Priyanka		Gol Bagicha, Gaya		6202627918
5.	Dr. Nutan Chaurasia		Police Line Road, Gaya		8789481408
6.	Mr. Mahfuj Hassan		Rafiganj, Aurangabad		9031380202
	DEPT. OF LIBRARY AND INFORMATION SCIENCE				
1.	Dr. Md. Rashid Nayeem		S. P. Road, Gaya		9931850590
2.	Smt. Preety Chandan		Visiting Faculty Member		9798976021
3.	Smt. Sadhana Dubey	B+	Visiting Faculty Member		7488536587
4.	Sri Rajesh Kumar	A+	Visiting Faculty Member		8969862852
5.	Sri Mukesh Kumar		Visiting Faculty Member		9931265864
6.	Sri Bushra Karim	A+	Visiting Faculty Member		7979761762
7.	Sri Satyam Saurav		J. P. Nagar, Gaya		6206183311
8.	Sri Manoj Kumar		Delha, Gaya		9835976765
	DEPT. OF ELECTRONICS				
1.	Mr. Ashutosh Kumar	B+	Ashok Nagar, Gaya		9936930531
	DEPT. OF LSW				
1.	Dr. Kishor Kumar		A. P. Colony, Gaya		8987395718
	DEPT. OF PUBLIC ADMINISTRATION				
1.	Smt. Sweeti Gupta		Near Magadh Medical College, Gaya		7903091918
	DEPT. OF ENVIRONMENT & WATER MANAGEMENT				
1.	Dr. Md. Rashid Nayeem		Behind Elegant School, Gaya		6202222703
2.	Smt. Sweety Kumari	O+	Visiting Faculty Member		9430256147
3.	Smt. Nutan Chaurasia	O+	Visiting Faculty Member		9693875452
4.	Smt. Sadhna Kumari		Visiting Faculty Member		8789866134
	DEPT. OF COMPUTER APPLICATION				
1.	Dr. Amit Kumar	O+	Chand Choura, Gaya,	amitgayamca@gmail.com	9031801018
2.	Sri Kumar Shekhar Singh	A+	South Church Road, Gaya,	ssssingh@gmail.com	9934428036
3.	Er. Avinash Kumar		Nutan Nagar, Gaya,	avinashkumarsingh17@gmail.com	9006746060
4.	Zeenat Praween	O+	New Karimganj, Gaya,	zeenatparween@gmail.com	9234772696
5.	Sri Amit Kumar	B+	Mustafabad, Gaya	amitchhaya14@gmail.com	9955835409
6.	Sri Satyendra Kumar	AB+	Bodhgaya,	satyendrakumar@gmail.com	8789435664
7.	Sri Amarjeet Kumar	B-	Teacher Qtr. GCG, Gaya,	amarjeetgcg@gmail.com	9852220554
8.	Md. Usman Ghani	B+	New Aliganj, Gaya,	ghani0631@gmail.com	9852467707
9.	Sri R. S. Suryamani	B+	Bairagi, Gaya,	suryamani.pinkoo@gmail.com	9097887710
10.	Shambhu Kumar		P.S. - Kothi, Gaya,	shambhu.kumar130@gmail.com	9958396421
11.	Dr. Dharmendra Kumar				9472296015
12.	Dr. Ashwini Kumar				9110122503
11.	Mukesh Kumar Tiwary		Tilha Dharamshala, Gaya,	mukeshtiwary509@gmail.com	9932801650
12.	Sri Anant Kumar	O+	Tutwari, Gaya,	anantkumar007@rediffmail.com	9430840333
13.	Sweta Singh		Tilha Mahavir Asthan, Gaya,	swetamaruti82@gmail.com	7004568646

S.N.	Name	Blood Gr.	Address	Email	Mobile
			DEPT. OF EDUCATION (B.ED. COURSE)		
1.	Dr. Dhananjay Dheeraj	B-	Sangam Chowk, Gaya,	dheeraj.dhananjay99@gmail.com	9973436097
2.	Dr. Sadre Alam	A+	Deora Bandhuli, Darbhanga,	msalam15.msa@gmail.com	9931997129
3.	Dr. Abhishek Kumar	B+	Bhawan Bazar, Chapra,	abhishekchp.1982@gmail.com	9097638067
4.	Mr. Ajay Sharma	B+	Berra, Masaudhi, Patna,	ajay.patna.sharma@gmail.com	8538934201
5.	Ms. Nikhat Parween	B+	Nagmatiya Colony, Gaya,	pnikhat612@gmail.com	9199465863
6.	Dr. Rani Neena Priya	O+	Vidyakunj Apt. Patna,	shaileshbobby@gmail.com	9905260474
7.	Mr. Amarendra Kumar	B+	Hanuman Nagar, Gaya,	amarendravbu1388@gmail.com	8987227364
8.	Mojahid Imam Ahmad	O+	Aliganj, Gaya,	ahmadmojahidimam@gmail.com	9507598205
9.	Anjani Kumar	A+	Mustafabad, Gaya,	anjanigaint1613@gmail.com	7277700394
10.	Ashwani Kumar	AB+	Chapardah, Gaya,	ashwanikmr@gmail.com	8521909497
11.	Tajwar Naz	O+	Katari Hill Road, Gaya	naaztajwar@gmail.com	7488174181
12.	Kumari Sangeeta Rai	B+	Vishnupad, Gaya	raisangeeta7788@gmail.com	7766887038
13.	Md. Sabir	B+	Katari Hill Road, Gaya	sabirgaya1234@gmail.com	6200286364
14.	Vikash Kumar	O+	Gaya College More, Gaya,	vk9430055852@gmail.com	9430055852

DEMONSTRATORS

1.	Dr. Satyendra Kr. Singh	A+	Chemistry	Ashok Nagar, Gaya	9430607310
2.	Sri. C. K. Singh	B+	Physics	Ashok Nagar, Gaya	9771510478
3.	Sri Ashok Kumar	A+	Chemistry	Ghugharitad, Mali Baghicha, Gaya	9430092970
4.	Sri Asadul Haque	B+	Chemistry	"Basera" New K'ganj, Rd. No.3, Gaya	9608730017
5.	Dr. Niranjan Singh	B+	Chemistry	Red House Compound, Gaya	7739214444

DR. R. P. HOSTEL & MAHILA HOSTEL

1.	Dr. Sonu Annapurna	Warden (Boys & Girls)	8340572846
2.	Sri Amarjeet Kumar	OSD (Boys & Girls)	9852220554
3.	Sri Manish P. Singh	Care Taker	9801873888

GAYA COLLEGE FAMILY
ACCOUNT & ESTABLISHMENT INCHARGE

S.N.	Name	Blood Gr.	Address	Email	Mobile
1.	Md. Jawedul Bari	Accountant	Gaya		8271135322
2.	Sri Santosh Kr. Singh	I/C H. Asst	Gaya		9117187320

NON- TEACHING STAFF III GRADE MOBILE NUMBER

1.	Sri Pramod Kumar Sinha		9199097182
2.	Sri Santosh Kumar Singh	B-	9117187320
3.	Sri Bhupendra Kumar Singh	A+	9431279621
4.	Sri Rajiv Nayan Pd. Singh		9973450600
5.	Sri Vijay Bahadur		8539090402
6.	Md. Jawedul Bari		8271135322
7.	Sri Digvijay Krishna	O+	9430070835
8.	Sri Rajiv Ranjan	O+	9934400156
9.	Sri Dilip Kumar	OB+	7903919959
10.	Sri Manish Pratap Singh	O+	9801873888
11.	Sri Raju Chaudhry	O+	9031530556
12.	Md. Sajid Perwez		9031184145
13.	Sri Anil Kumar Sinha		9430411866
14.	Sri Anil Kumar		7870820974
15.	Sri Rajesh Kumar		9430997802
16.	Sri Kundan Kumar		7759801264
17.	Sri Amar Kumar		9576990730
18.	Sri Raju Kumar		7909077965
19.	Sri Rajesh Kumar 2		8709496851
20.	Sri Kamlesh Kumar		9122722000
21.	Sri Neeraj Kumar		6287053698
22.	Sri Sandeep Kumar	AB+	9102810474
23.	Sri Ravi Ranjan		7766888158
24	Md. Tajuddin	O+	9097323639
25.	Sri Shiv Shankar		6202358501
26.	Sri Sudhir Kr. Jamuar		8544310986
27.	Abu Hozaifa		9155956852
28.	Sri Jitan Kumar Pandey		7667809253
29.	Sri Durgesh Kumar Suman		8178688529
30.	Sri Raju Ranjan Kumar Singh		7004416473
31.	Sri Rahul Kumar Singh		9718518344

NON- TEACHING STAFF IV GRADE MOBILE NUMBER

1.	Sri Hare Ram Rai	O+	9931437582
2.	Sri Mahendra Pd. Malakar		9546788007
3.	Md. Jahangir Khan	A+	8651779343
4.	Sri Praween Kumar Singh	B+	9097363371
5.	Sri Ram Kumar Jha	O+	9199467168
6.	Sri Kushila Devi		7462920819
7.	Smt. Phooljhari Devi		9304214374
8.	Smt. Shanti Devi		9934712903
9.	Smt. Janki Yadav	A+	8083139489
10.	Sri Kameshwar Bhagat		9162424182
11.	Sri Mahendra Saw		6287566486
12.	Sri Yogendra Singh		
13.	Sri Upendra Kr. Upadheya	B+	9931720833
14.	Sri Laleshwar Malakar		7250819983
15.	Sri Jagdish Singh		
16.	Sri Kamlesh Prasad	O+	9801667150
17.	Sri Kailash Prasad		8532474640
18.	Sri Kauleshwar Sao	O+	9470630130
19.	Smt. Vidya Devi		
20.	Sri Ramjanam Ram		8797055256
21.	Smt. Kamini Devi		9470026917
22.	Sri Parmeshwar Yadav		7250144663
23.	Sri Ramsewak Yadav		7257983087
24.	Sri Kauleshwar Prasad	A+	8292152601
25.	Sri Dinesh Kumar	O+	8002476555
26.	Sri Sajan Ram		
27.	Sri Shyamdeo Yadav		9262234442
28.	Sri Umesh Kumar - 1		7970633575
29.	Sri Rohit Yadav		9521994507
30.	Sri Om Prakash Singh		9308306526
31.	Sri Deo Narayan Mukhiya		9931852198
32.	Sri Jagdeo Raw		
33.	Smt. Parwati Devi		7484083505
34.	Sri Krishna Yadav		8521414697
35.	Sri Umesh Kumar - 2		9525468175
36.	Md. Gulam Sabir		9835404039
37.	Sri Bashistha Prasad		7781044074
38.	Sri Laxmi Prasad		8651764503
39.	Sri Ashok Kumar		8544311488
40.	Sri Yogendra Kumar		9939886404
41.	Sri Mithilesh Kumar		9771680705

LIST OF COMMITTEES

Patron

Prof. (Dr.) Satish Singh Chandra

1. Reception Committee

1.	Dr. Birendra Kumar (Chemistry)	:-	Co-Ordinator
2.	Dr. Ram Uday Kumar (Hindi)	:-	Member
3.	Dr. Bibha Singh (Geography)	:-	Member
4.	Dr. Sunil Kumar Singh (History)	:-	Member
5.	Dr. Reshma Yashmin (Zoology)	:-	Member
6.	Dr. Ramdeo Prasad (Psychology)	:-	Member
7.	Mr. Adarsh Kumar Gupta (Bursar)	:-	Member
8.	Dr. Arun Garg (Philosophy)	:-	Member
9.	Dr. Dhananjay Dheeraj (B.Ed.)	:-	Member
10.	Mr. Bhupendra Kumar Singh(Office)	:-	Member
11.	Mr. Santosh Kumar Singh(S.O.Gen.)	:-	Member

2. Stage Management Committee

1.	Dr. Runoo Ravi (English)	:-	Co-ordinator
2.	Dr. Shreedhar Karunanidhi (Hindi)	:-	Member
3.	Dr. Dhananjay Dheeraj (B.Ed.)	:-	Member
4.	Dr. Kumari Puja (Phil.)	:-	Member
5.	Dr. Priyanka Kumari (Hindi)	:-	Member
6.	Mr. Amarjeet Kumar (BCA)	:-	Member

3. Cultural Committee

1.	Dr. Pankaj Kumar Bharti (Phil.)	:-	Co-Ordinator
2.	Dr. Sangita Arya (Sanskrit)	:-	Member
3.	Dr. Shruti Priya (Economics)	:-	Member
4.	Dr. Talat Afreen (Botany)	:-	Member
5.	Dr. Jyotsana Chaturvedi (Phil.)	:-	Member
6.	Dr. S.K. Mukherjee	:-	Member
7.	Mr. Ajay Mishra (B.Ed.)	:-	Member
8.	Dr. Nikht Perween (B.Ed.)	:-	Member
9.	Mr. Jitan Kumar Panday	:-	Member

4. Refreshment Committee

1.	Dr. Rajesh Kumar Mishra (Pali)	:-	Co-Ordinator
2.	Dr. MD. Rashid Nayeem (Zoo.)	:-	Member
3.	Dr. Sanjay Tiwari (Pol Science)	:-	Member
4.	Mr. Amarjeet Kumar(BCA)	:-	Member
5.	Mr. Raju Kumar(Office)	:-	Member
6.	Mr. Neeraj Kumar (Office)	:-	Member

5. Souvenir Committee

1.	Dr. Anoop Pati Tiwari (Phil.)	:-	Co-Ordinator
2.	Dr. Runoo Ravi (English)	:-	Member
3.	Dr. Sonu Annapurna (Hindi)	:-	Member
4.	Rajesh Kumar Mishra (Pali)	:-	Member
5.	Dr. Sanjay Tiwari (Pol Science)	:-	Member
6.	Dr. Anand Kumar (Psy.)	:-	Member
7.	Dr. Vishal Kumar Yadav	:-	Member

6. Campus Discipline Committee

1. Proctorial Board
2. Dr. Harshvardhan Singh Chauhan (Maths)
3. Dr. Sunil Kumar Singh (History)
4. Dr. Snehlata Kumari (History)
5. Mr. Bhupendra Kumar Singh (Office)

7. Campus Beautification Committee

1.	Dr. Rashid Nayeem (Zoology)	:-	Co-Ordinator
2.	Dr. Sanjay Tiwari (Pol Science)	:-	Member
3.	Dr. Harshvardhan Singh Chauhan (Maths)	:-	Member
4.	Dr. Anand Kumar (Psy.)	:-	Member
5.	Mr. Amarjeet Kumar (BCA)	:-	Member
6.	Mr. Jawedul Bari (S.O.Accounts)	:-	Member
7.	Mr. Neeraj Kumar (Office)	:-	Member
8.	Mr. Anjani Kumar (Commerce)	:-	Member

8. Press & Publicity Committee

1.	Dr. Dhananjay Dheeraj (B.Ed.)	:-	Member
2.	Dr. Dharmendra Kumar (BCA)	:-	Co-ordinator
3.	Dr. Kishore Kumar (Sociology)	:-	Member
4.	Mr. Anjani Kumar (Commerce)	:-	Member

9. Invitation Committee

1.	Dr. Birendra Kumar (Chemistry)	:-	Co-ordinator
2.	Dr. Md. Sadique (English)	:-	Member
3.	Dr. Reshma Yasmin (Zoology)	:-	Member
4.	Mr. Jawedul Bari (S.O. Accounts)	:-	Member
5.	Mr. Santosh Kumar Singh (S.O. Gen)	:-	Member

College Activities

Sprawling Campus

DEPT. OF I.T.

GENERAL LIBRARY

DEPT. OF EDUCATION

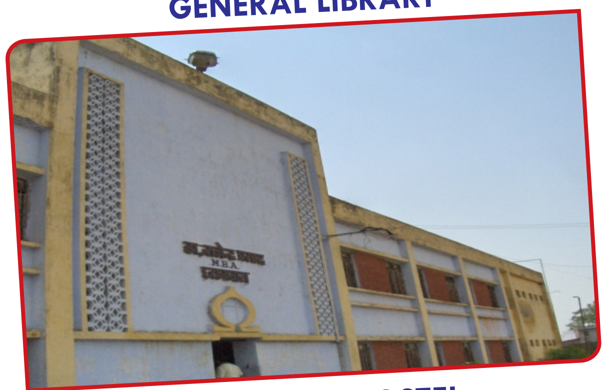

DR. R.P. BOYS HOSTEL

SCIENCE BLOCK

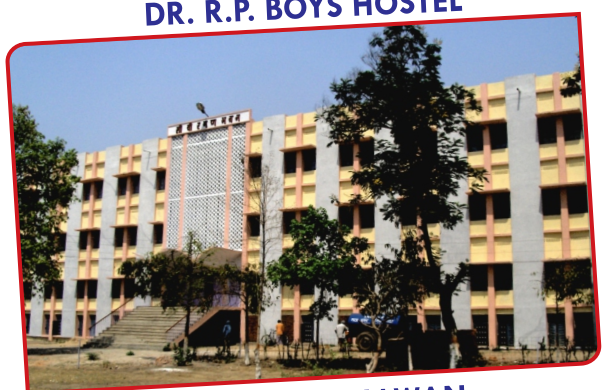

C.V. RAMAN BHAWAN

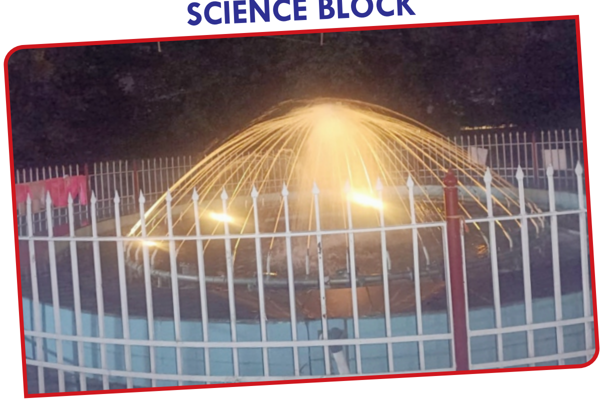

DALMIA BHAWAN

Published by Prof. (DR.) SATISH SINGH CHANDRA, Principal, Gaya College, Gaya
Printed at Gaya Printers, Gaya (Bihar) # 9431632375